

वेदों और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की च्योति

कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब

लेखक

डा.वेदप्रकाश उपाध्याय

एम.ऐ.(संस्कृत)

डी.फिल., धर्मशास्त्राचार्य.

डिप.इन जर्मन

प्रकाशक

सारस्वत वेदान्त प्रकाश संध
प्रयाग

प्रस्तुतकरता

मौलाना गुलाम नबी शाह

ISLAM DESCENDED IN INDIA

Allahtala has taught to our father “ Hazrath Adam (A.S) the knowledge of Islam, advantage and disadvantages of every creation made by him, and was sent to Jannath. A young lady Hazrath Hawa (A.S) was born with one of the Chest bone of Hazrath Adam (A.S). Their they got married.










Due to the Satanic act they made a mistake and Allahtala descended them down on the earth.

Hazrath Adam (A.S) was descended on earth in India i.e, on the mountain of Sarandeeep, Srilanka on 10th of Muharram Night of Jumma (Friday). To day also the Adam footprint, Adam Mountain and Adam bridge can be seen in Srilanka

Hazrath Hawa (A.S) was descended in Jeddah (Arabian Country)

Ref: Al Quran Al Baqara: 34-36, Tafseer: Nayeemi, Khazim Page 330, Durre Mansoor etc. Al Hadees: Tibrani (Rivayat-Ibne Abbas, Ibne Umar, Ibne Saad, Ibne Asakir etc) Abu Nayeem etc. Atlas-UI-Quran: Dar-us-Salam - Riyaz Jeddah Sharjah Lahur London Hoston Newyork. History: India & Geography (Osmania University) Islamic Encyclopedia, Page No. 22

Bible (Injeel) SAY

-  Jesus (pbuh) said : Ahmed (Moahmmmed -saw) is going to come after me
-  Mohammed (pbuh) is the prophrt of the Prophets. Moahmmmed is the last & final messenger of Allah
-  Mohammed (saw) is for all Nations
-  About Moahmmmed (saw) is written not only in Towrah and Injeel but also in Holi Books of all religion
-  Prophet Solemen (AS) as used the name of Moahmmmed (saw)in his Phrases
-  Mohammed (saw) will be born in the Mecca (in the Desert of Mekkah - Arabia).
-  Moahmmmed (saw)will shine from Paran
-  As Mohammed (saw) comes, all previous rules will dissolve (Dismiss).
-  All the mankind shall follow faithfully to Mohammed (saws)

“AWAKEND WILL BE HONOURED SLEPT WILL BE LOST”

References : Bible : Hangai,2:7,9, Song of Suleman, 5:16, Isaiah, 29:12 to 18. 21 : 13,17. 42 : 10 Genesis, 17 : 20. 21:17,21, Deuteromomy, 33:2,3, 18: 18,19. John, 1:11. Mathew, 17:18 Hahokkuk, 3:3 KJV/NAB.

Quran : 2:29, 146. 3:81. 7:157,21 : 107,25 : 1, 46:10. 53: 2,3. 61:6.

(वेदों और पुराणों आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति)

कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब

लेखक

डा.वेदप्रकाश उपाध्याय

एम.ए. (संस्कृत-वेद)

डी.फिल., धर्मशास्त्राचार्य,

डिप्र. इन जर्मन

सहायक आनुसन्धान अधिकारी

बी.आई. ऐस. एण्ड आई.एम.

पंजाब यूनिवर्सिटी, पो.आ.

साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)

आनरोरी डायरेक्टर सारस्वत

वेदान्त प्रकाश संघ (भारत)

प्रकाशक

सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ

प्रयाग 9

मूल्य (शान्ति विश्वास और श्रद्धा)

विषय - सूची

१. विद्वानों के विचार
२. सहायक ग्रन्थों की सूची
३. प्रस्तावना
४. अवतार का अर्थ
५. अवतार के कारण
६. अन्तिम अवतार के कारण
७. अन्तिम अवतार की विशेषताएँ
८. अन्तिम अवतार का समय
९. स्थाननिरूपण
१०. संसार के सामाजिक और धार्मिक पतन का काल
११. अन्तिम अवतार सिद्धि
१२. वेदों और कुरआन की शिक्षा
१३. उपसंहार

शोध पुस्तक पर विद्वानों के विचार

डा. गोविन्द कविराज

एम० ए०, एम० ए० एम० एस०, एच० एम० डी०, पी० एच० डी०,
सर्वदर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, आयुर्वेदविज्ञानाचार्य,
भिक्षाचार्य, वेदरत्न, हिन्दी साहित्यरत्न वेदान्तशास्त्री (अंग्रेजी सहित)
प्रोफेसर वाराणासेय संस्कृत विश्वविद्यालय,
प्रिंसपल नेपाली संस्कृत महाविद्यालय वाराणासी-१

प्रिय महाशय,

-कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब - ग्रन्थ को मैंने पढ़ा। समस्त संसार में विस्तृत पारस्परिक सैद्धान्तिक वैमनस्य को हटाकर मानव मात्र को एक सुत्र में आबद्ध करने के लिये आपने जो तक प्रयास किया है वह अती प्रशंसनीय है।

सेवा में

श्री पं० वेद प्रकाश उपाध्याय भवदीय
कल्कि-सारस्वत वेदान्त प्रकाश संघ गोविन्द
प्रयाग, १६-१०-७०

पो०. - डा० श्री गोपाल चन्द मिश्र

एम० ए०, पी-एच० डी० धर्मशास्त्राचार्य, वेदाचार्य
वेदविभागाध्यक्ष, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी - २

सृष्टि में मानवता समान है। उसके उत्पान और पतन के स्वरूप भी समान है। सभई देशों में महापुरुष या महामानव की आवश्यकता भी समय पर पड़ती है। किसी व्यक्ति का अवतार या महापुरुष या महामानव होना बिना ईश्वरांश के प्रकाश के सर्वथा असंभव है। मोहम्मद साहब अरब देश की आवश्यकता के नुसार ईश्वरांशीय महापुरुष थे इस सत्त्व को मानने में किसी भी व्यक्ति को हिचक नहीं हो सकती। महापुरुष देशकाल परिस्थिति के अनुरूप भले ही एक भूभाग में सम्मानित या उपदेष्टा हो, पर उसकी महत्ता का वर्णन दूसरे

देशवासी अपनी भाषा एवं सस्कृती के अनुरूप शब्दों में करते हैं। इस भावना को डा.वेदप्रकाश उपाध्याय एम. ए. की कल्कि अवतार और मोहम्मद साहब पुस्तक विश्वास दिलाती है। यद्यपी लेखक ने हिन्दु शब्द को भारतीय का पर्यायवाची सिद्ध किया है। पर हम जन प्रसिद्धि की भ्रम को ठीक भी माने इस पुस्तक में सिद्ध हुई बात मुसलमान भाइयों के विचार में दृढ हो जाय। हिन्दु मुसलमान नाम के दो घर मानने पर भी एक मूल पुरुष मुहम्मद साहब या कल्कि के मानने वाले होने के नाते अभिन्नता का भईचारा बढ़ जायगा, जो दोनों सम्प्रदायों के अनुयायियों के लिए अविरोधी सहअस्तित्व को जगा सकता है। प्रत्येक क्ती को आभ्यान्तरिक विभिन्नता तब तक घृणित नहीं हो सकती जब तक व्यवहार अर्थात् सुरक्षा, सुख दुःख सहयोग, खेलकुद आदि। में मे बुद्धि नहीं पनपनती। भारत के हिन्दुओं में तथा मुसलमानों में भी अनेक सिद्धांत विचार एवं सम्प्रदाय हैं। पर वे आभ्यान्तरिक भेद, व्यवहार को प्रभावित नहीं करते इसलिए सभी हिन्दू या मुसलमान अपने में एक है। उसी प्रकार अभ्यान्तरिक या आध्यात्मिक सिद्धांत विचार के भेद रहने पर भी यदी मुसलमान हिन्दु व्यवहार में सुरक्षा सुख दुःख सहयोग खेल कूद मे एकता हृदय से मानने लगे-तो वह दिन दूर नहीं कि विश्वव्यापी मानवता के संहार का भय सर्वदा के लिये दूर भाग जाय।

संस्कृत विश्वविद्यालय

७ आध्यापक निवास

जगतगंजवारणासी -२

फोन नं. ६७०२६

शुभाशंसी

श्री गोपाल चन्द मिश्र

४-२२-१६७०

Dated: 15-4-69

- श्री वेदप्रकाश उपाध्याय (शोधछात्र) ने हाल ही में मोहम्मद साहब और कल्कि अवतार पर एक पुस्तिका प्रकाशित करने की योजना बनाई है। मैं ने पुस्तक के प्रारूप को देखा है। लेखक ने एक विचारणीय विषय पर लेखनी उठाई है तथा काफी खोजकर अपना तम सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। उनका अध्यवसाय तथा दृष्टिकोण सराहनी है।

स.प्र.चतुर्वेदी,

एम.ए (संस्कृत वेद)
भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,

व्याकरणाचार्य
प्रयाग विश्वविद्यालय।

(२)-कल्कयवतार मोहम्मदयोस्तुलनात्मकाध्ययनवेशिष्ट यबोधकतनव्यशैली समीक्ष्य विशिष्टं तुष्यन् मदीयं मनः रचयितुर्विशिष्टविकासनतया आधुनिक युगीनजनैक्यसम्पादनतया च पर प्रसीदति, श्रीमानीशःरचयितारं वैशिष्ट्यं नावलोकयत्वितिशम।

भय्यरचनमिदमद्य विलोक्य कस्य जनस्य न हृष्येद्येतः।

जयकिशोरविदुषःश्रीलंस्य सम्मतिरस्तु रचयितुश्चैयः॥

व्याकरणाचार्य प्रधानाचार्य

सौदामिनी संस्कृत महाविद्यालय, इलाहाबाद।

(३)- कल्कि और मोहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोधपुस्तक को पढ़कर हृदय में सर्वधर्मसमन्दय की पुर्वप्रतिष्ठित भावना और भी दृढ़ हुई। पुस्तक में प्रस्तुत अन्यान्य प्रमाणों एवं उद्धरणों को देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस्लाम की उत्पत्ति का मूल बीजवैदिक धर्म में ही निहित है। उस (कल्कि) सन्देशिष्टा की धर्म-विजयहेतु प्रयुक्त मामग्री में -घोड़ों व तलवार - आदि का संकेत किसी भी वैध्दिक व्यक्ति को यह सोचने के लिए बाध्य कर सकता है, कि आजवह भविष्य की कल्पना का विषय नहीं। अपितु भूतकाल का पात्र रह चुका है। पुस्तक का पर्यवेक्षण अन्ततः यही सिद्ध करता है, कि - भगवान- कल्कि हमारे मोहम्मद साहब ही है।

वस्तुतः उस परमसत्ता की सर्वमयता के लिए इन प्रमाणों की कोई आवश्यकता

तो नहीं है, परन्तु शुभशंसा के रूप में मैं यही कहूँगा कि उपाध्याय जी का यह प्रयास हिन्दुमुस्लिम विचार-वैभिन्न्य को धो डालने में समर्थ हो।

-श्री अशोक तिवारी

लवेदी-इटावा (उ.प्र.)

(४)- कल्कि और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन-विषयक शोध पुस्तक निसन्देह नवीन, न्पेष्णात्मक, तर्कपूर्ण विचारों से युक्त, मुसलमानों और हिन्दुओं के असमान दृष्टिकोण को एक सूत्र में बांधते हुए ऐसे संसार की स्थापना करेगी, जो कल्याण कारक, आनन्दपूर्ण एवं क्लेशरहित होगा।

-श्री राम भवन मिश्र,

भोजकोल्हूआ, चील्ह,

मिर्जापुर (उ.प्र.)

(५)- कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन पुस्तक पढ़ने से मुझे यह विश्वास हो गया कि कल्कि और मुहम्मद एक ही हैं।

-श्री इन्द्रजीत -बल

वर्दवान

(७)- प. वेदप्रकाश उपाध्याय द्वारा किया गया -कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्ययन - विषयक शोधकार्य मैं ने भलीभाँति देखा।

इस लघुपुस्तक में विद्वान शोधकर्त ने भारतीय पौसणक सहित्य और इस्लामी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके कल्कि के अवतार के सम्बन्ध में जो महत्वपूर्ण अन्वेषणात्मक कार्य किया हैं। वह वर्तमान धार्मिक संघर्षों का उन्मूलन करने में अत्यधिक उपकारी होगा। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में एकेश्वरवाद का पुनः प्रसार होगा और समस्त मानवजाति में साधारण भाईचारे का प्रेम उत्पन्न होगा। हमे पूर्ण आशा हैकि इस लघु ग्रंथ को सभी सम्प्रदाय के अनुयायी पसन्द करेंगे और अपने सीमित अंधविश्वासों से उठकर

विश्वबन्धत्व के प्रकाश में आएँगे। इस प्रकार यह प्रयास एक महान समन्वय का सन्देश देगा।

हमारी यह शुभकामना है कि लेखक का यह प्रयास समाजके लिए कल्याणकारी हो।

-डा.रामसहाय मिश्र,
शास्त्री,
बहादुरगंज, इलाहाबाद।

(७)- इस शोधपुस्तक को पढ़ने मात्र से मुझे हिन्दु-मुसलमान दो व्यापक सम्प्रदायों के बीच उलझी गुथियों का सुलझना और साथ ही हिन्दुत्व का वह प्राचीन व्यापक रूप पुनः समक्ष हुआ दिखाई पड़ रहा है।

-पं. राम बहादुर मिश्र,
लोगावाँ, कुभियावाँ, इलाहाबाद.

(९)- अभी तक ऐसी कोई भी अन्वेषणात्मक पुस्तक नहीं निकली, जिसने विभिन्न सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया हो।

अशोक कुमार जायसवाल

सारस्वत सदस्य, प्रयाग कार्यकारिणी समिति
सारस्वत-वेदान्त प्रकाश संघ
इलाहाबाद, उ.प्र.

शध पुस्तक सहायक ग्रन्थों की सूची

संस्कृत:- १. ऋग्वेद संहिता २. यजुर्वेद संहिता ३. सामवेद संहिता
 ४. अथर्ववेद संहिता ५. श्वेताश्वरोपनिषद् ६. केनोपनिषद्
 ७. महाभारतम्-महर्षिवेदव्यासप्रणीतम् ८. श्रीमद्भागवत पुराणम्-महर्षि वेदव्यासप्रणीतम्-
 गीता प्रेस गोरखपुर, सं. २०२१ ९. भविष्य पुराणम् - सं. २०२१-खेमराजश्रीकृष्णदास,
 श्रीवेंकटेश्वर स्टीम बम्बई, १६५६ १०. कल्किपुराणम् - महार्षिवेदव्यासप्रणीतम्, सं.
 १३६३ श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई ११. श्रीमद्भागवद्गीता

हिन्दी :- १२. हिन्दूमुस्लिम एकता - पं. सुन्दरलाल जी, हिन्दुस्तानी कल्चर
 सोसाइटी, १४५ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद. १३. कुरआन

उर्दू और अंग्रेजी:-

14. Shimail Tirmizi - Maulana Mohammad Zakaria
15. Sharwar-c-Alam. -Mohammad Muslim,
Published at Jayyaed Press, September, 1960 A.D. Kishanganj Delhi.
16. Sirtunnabi - Shibli Nomani and Sayyad Sulaiman Nadawi,
Published from - Matba Maarif, Aza-garha. Fourth Edition 1958 A.D.
17. Asah-usSiyar. -Hakim Abdul Barakat, Abdur-Rauf,
Pub: Noor Mohammad, Asah-ul-Matba, Karachi, Sept1932 A.D.
18. Jamaul-Favaid Sulaiman,
Publisher Ashiq-Ilahi, Khaira Press, Meratha.
19. Mohammad and Mohamedenosm, by Rev. Bosworth Smith.
20. Decline and fall of the Roman Empire, by Edward Gibbon
Published from E.P. Dutton & Co. Newyork, 1210 A.D.
21. The speeches of Mohammad, by Lanepoole,
Published by Macmillan & Co. (London) 1882.
22. An Encyclopedia of World History - W.L. Langer,
Published by George G. Harrap & Co. Ltd., Printed in the U.S.A.
23. A History of Civilization in Ancient India-by R.C. Dutt.
Revised Edition, 1893, Pub:by Kegan Paul, Trench Trubner & Co. Ltd.
24. Apology for Mohammad - by Godfrey Higgins,
Published by Allahabad Reform Society, Dariyabad 1929 A.D.
25. Life of Mchamet - Sir William Muir
Published from smith, Elder & Co. (London) 1877 A.D.

प्रस्तावना

इस शोध पुस्तक में प्राचीन भारतीय परम्परा तथा इस्लामी परम्परा के समन्वय को प्रस्तुत किया गया है। इस्लामी परम्परा में जो स्थान रसूलों नबियों या पैगम्बरों का है, वही स्थान भारतीय परम्परा में अवतारों का है। मुसलमान मोहम्मद साहब को अन्तिम सन्देश मानते हैं, और भारतीय परम्परा कल्कि को अन्तिम अवतार। विदेशों में केवल सन्देश आते हैं और भारत में केवल अवतार, यह असम्भव है, क्यों कि सभी भूमि परमेश्वर की है। उसमें वैषम्य का स्थान नहीं है। सभी देशों के सत्तद् साहित्यों में उन्हीं देशों की महिमा का गुणमान हुआ है अतः कोई भी स्वदेशी या विदेशी अपने देश को नीचा नहीं कहेगा। सन्देश केवल में ही हुए विदेशों में नहीं, यह भी एकांगी विचार है। मोहम्मद अन्तिम सन्देश हैं, यह जानकर मुझे पुराणों में कल्कि विषयक चरित पढ़ने की उत्कण्ठा हुई। भारतीय परम्परा के अनुसार पहले कुछ कलियुग में बीत गए, उनमें कल्कि के अवतार में जो घटनाएँ घटीं और इस में जो घटनाएँ घटनी हैं उनकी तुलना मैं ने मोहम्मद साहब के जीवन से की जो प्रायः समान उतरी। अल्पमात्र जो कहीं कुछ अन्तर पड़ा वह जैसे राम के चरितों में अन्तर पड़ जाता है उसी प्रकार हुआ, और उसका समाधान लोग यह कहकर देते हैं कि - हरि अनन्त हरि-कथा अनन्त - वही कहकर मैं भी कर रहा हूँ मैं कल्कि अवतार को कथा इसलिए नहीं कहना चाहता, क्योंकि -क- कल्पितनृत्तान्ता सत्यार्थास्यायिकाट के सिद्धान्त से इसको आस्थायिका ही मानना युक्तिसंगत है।

वैज्ञानिक अणुविस्फोटकों से जो सत्यनाश सम्भव है, उसका निराकरण धार्मिक एकता सम्बन्धी विचारों से हो जाता है। जल में रहकर मगर से बँरे करना उचित नहीं, इस कारण मैंने वह शोध किया जो धार्मिक एकता का आधार--- हैं। राष्ट्रीय एकता----के समर्थकों द्वारा इस शोध पत्र पर कोई आपत्ती नहीं होगी। आपत्ती होगी तो कूपमण्डक लोगों को, यदि वे कूप के बाहर निकलकर संसार को देखें तो कूप को ही संसार मानने की उनकी भावना हीन हो जाएगी। ईश्वर कि आज्ञासे ईश्वरी वाणियों का प्रचार हो, इस उद्देश्य से मैं ने इस प्रकार के शोध कार्यों में हाथ बटाया है। इस के पूर्व कुछ लोगों ने इस विषय पर कुछ लिखा था, या नहीं ये स्पष्ट कहा नहीं जा सकता, परंतु - सरवरे आलम - में इतना संकेत है कि मोहम्मद साहब और कल्कि एक ही हैं मेरे इस शोध पत्र का प्रकार होगा,

स्वदेश और विदेश में, क्योंकि ईश्वर की सहायता से ये पुस्तक लिखी हैं इस में जो तर्क संगत बातें आई हैं वो मेरे विचार नहीं, या तो वे वेदों पुराणों के विचार हैं, या मेरे अंदर हुई ईश्वरीय प्रेरणा के।

मुझे पूर्ण विश्वास हैं कि इस शोध पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाजमें ही नहीं बल्कि निखिल भ्रमणडल में एकता की लहर दौड़ पड़ेगी, और धर्म के नाम पर होने वाले कलह शांत होंगे। यदी लोगों की बुद्धि काम करेगी। तो परस्पर एक दूसरे के पर्वों में हाथ बटाकर स्वयं एकता के प्रतीक बनेंगे। नाम से कोई हिन्दू, मुसलमान या ईसाई नहीं बनता है। यदी मैसिराजुल हक को सत्यदीप, अब्दुल्लांको पंडित रामदास या रामयश तथा अब्दूर्हमान को भगवान दास कहूंगा तो वे बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि उनके नामों का संस्कृत में अनुवाद यहीं होता है, यदी वे चाहें तो मारे नाम का अनुवाद अरबी भाषा में नूरुलहुदा भि कह सकते हैं। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना हैं कि सभी वर्गों में विशेष कर हिन्दू और मुसलमानों में पूर्ण मेल हो, तथा मेरा यह शोध पत्र लोगों में सदभावना का संचार करे। विश्व में बन्धुत्व हो और सभी का कल्याण हो। कल्कि और मोहम्मद साहब तुलनात्मक अध्ययन को पढ़कर कहीं लोगों को यह न शंका होने लगे कि मोहम्मद साहब के चरित्रों का आधार लेकर लोगों ने कल्कि का भावी वृत्तान्त बनाडाला हैं, इसलिए मैने जिन सनातन धर्मग्रंथों का आश्रय लिया है, उनमे से पुराणों के रचनाकाल के विषय में कोई भि लेखक किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा। पाशचात्य इतिहास करोंने श्रोतसूत्रों, उपनिषदों, पुराणों आदी के काल निर्धारण करने के समय स्थान २ पर शायद (Probable) शब्द का प्रयोग प्रचुरता से किया हैं, जो उनके निर्णय की अनिश्चितता का प्रतीक हैं। सर्व प्रथम मैं उन पाशचात्य विद्वानोंका मत पुराणों के रचना काल के विषय में क्या हैं - इसका उल्लेख करके काल निर्णय करूँगा, तब विषय वस्तु का प्रारम्भ करूँगा।

पुराणों समय डब्ल्यू, एल, लांगर के अनुसार ईसा के ४०० वर्ष बाद का है। इनके अनुसार रामायण और महाभारत की रचना दो सौई० पूर्व की है। लांगर महोदय के उपयुक्त कथन में वे विपरीत पंक्तीयाँ हैं।

१. सरवरे -मोहम्मद मुस्लिम, Published at Jayyad Press, Sept. 1960, A.D. Kashanganj Delhi

१. रामायण के कर्ता वालमीकि और महाभारत के कर्ता व्यास जी का समकालीन होना रामायण और महाभारत कि समकालीनता से पुष्ट होता हैजो नितान्त

असंगत है, क्यों कि आदी कवि वाल्मीकि व्यास जी के समकालीन कभी नहीं हो सकते। इसका कारण यह है कि राम के ही समय के वाल्मीकी थे, जैसा कि राम द्वारा परित्याक्त सीता के संरक्षण का कार्य वाल्मीकि को ही अपने आश्रम में करना पड़ता है, इस बात से सिद्ध होता है इतना ही नहीं: बल्कि अपने महाकाव्य की पूर्ति भी वाल्मीकि जी अपने आश्रम में करते हैं, इस बात की भी पुष्टि होती है।

२. राम का जीवन घटना त्रेतायुग कि, अतः त्रेतायुग में ही वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना किया जाना सम्भव है, और द्वापर युग में वेदव्यास जी द्वारा महाभारत की रचना।

३. शकराजका ईसा से मिलन भविष्य पुराण से सिद्ध हैं।

और वह शकराजविक्रमादित्य का परवर्ति था, अतएव विक्रमादित्य का समय ईसा के पूर्व का सिद्ध होता है। विक्रमादित्य के समय में रामायण और महाभारत तथा पुराण श्रद्धा के विषय थे अतः इन तीन करणों से लांगर का कथन असत्य सिद्ध होता है।

भाषा की दृष्टि से पुराण पाणिनि की अपेक्षा पर्याप्त प्राचीन है क्योंकि वह भाषा पाणिनि व्याकरण के बंधनों से रहित है। उसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग आर्ष प्रयोग है, जो वैदिक और लौकिक संस्कृत के मध्यकाल का है। पाणिनि का समय लांगर के अनुसार ३५० ईसवी पूर्व से लेकर ३०० ई.पू. के मध्य है। इस के अतिरिक्त बुद्ध जी का समय ५६३ से लेकर ४९३ ई.पू. के मध्य है। बुद्ध जी ने अपना धर्म प्रचार पालि भाषा में किया जो उस समय की बोलचाल की भाषा थी, यह बौद्ध धर्म ग्रंथों से सिद्ध होता है। भाषा की विकासशीलता होने के कारण संस्कृत भाषा का रूप बिगड़कर पालि, पालि से प्राकृत तथा प्राकृत से अपभ्रंश तथा आज हिन्दी होगया। संस्कृत भाषा की स्थिति बुद्ध जी के पूर्व सिद्ध होती है। कोई भी भाषा बहुत ही शीघ्र नहीं बदल जाती, बदलते २ हजारों वर्ष लग जाते हैं। बुद्ध जी के पहले व्याकरण के नियमों में बुद्ध संस्कृति भाषा का बातचीत में प्रयोग होता था, उस निश्चित व्याकरण के संस्थापक पाणिनि का समय, बुद्ध जी के समय में एक हजार वर्ष जोड़कर १५६३ ई.पू. के लगभग सिद्ध होता है। पाणिनि के सूत्रों के रचना से भी ये सिद्ध होता है कि उस समय लेखन के आभाव के कारण केवल कण्ठाग्र कराने की प्रक्रिया थी जो सूत्रों के माध्यम से सुगम थी। पुराणों का भाषा पाणिनि से पूर्व कि है, अत एवं आर्ष संस्कृत में पुराणों की रचना ई.पू. २५०२ से १५६३ ई.पू. के मध्य में सिद्ध होती

हैं। ये तो रहे ऊपरी प्रमाण जो, प्राय निराधार से हैं, क्योंकि सभी विद्वानों का मत संदेह पूर्ण हैं, और वे उन मतों कि इस्थापना के समय स्वयं - शायद , -संभव- हैं, या प्रश्रवाचक चित्रों का प्रयोग करते हैं। अब हम पुराणों के अन्तरंग प्रमाण के आधार पर उनका रचनाकाल प्रस्तुत करते हैं।

अद्वारह पुराणों में भविष्य पुराण भी एक है, जिसमें भविष्य कि बातें बताई गई हैं। जिन इस्थलों में लट् के स्थान में लट् लकार का या लड् लकार का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर व्यत्यायो बहुलम सूत्र से वैदिक संस्कृतीक की तरह तिङ्. का व्यत्यय हो गया है, अतएव पुराणों कि आर्ष भाषा निसंदेह लौकिक संस्कृत से उत्कृष्ट है। भागतपुराण द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय में कल्कि के पैदा होने की भविष्यवाणी की गई है, और उनकी विशेषता भी बताई गई है। प्रथम स्कन्ध में भी चौबीस अवतारों के प्रकरण में कल्कि को अंतीम अवतार माना गया है। भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पूर्व में व्यास जी भविष्य में होने वाली गाथा को आदम से प्रारंभ करते हैं कि हे मन। भविष्य में होने वाली सूत जी द्वारा वर्णित कलियुग की पूर्ण गाथा सुनकर तृप्ति प्राप्त करें।

करो२। इस कथन से यह सिद्ध होता है कि पुराण आदम के पूर्ववर्ती ठहरे। द्वापर युग को समाप्त होने में दो सौ आठ वर्ष रह गये थे, तब आदम का जन्म हुआ था३। कलियुग के बीते हुये ५०७० वर्ष हो रहे हैं, एतएव आदम आजसे ५०७०-२२०.९-वर्ष पहले हुये। उस समय लेखन कला थी नहीं, अतएव शलोंकों को कंठाग्र ही रखना पड़ता था। न्युह के समय से संस्कृत भाषा का पतन होने लगा,

1. The Mahabharath composed by several generations of bards, seems to have taken from about the second century B.G. although probably revised early in our era.

-Encyclopedia of world History By W.L. Langer, Page 42

२. एकदा तु शाकाधीशो हिमत्तु ग समाययौ। २१ हुणदेशस्य मध्ये वे गिरिस्थं पुरुषं शुभम्।
ददर्श बलवान् राजा गोरंगं धेतनस्त्रकम्॥ २२ को भनानिति सं प्राह स होवाच मुदान्वितः।
ईदमुत्र च मां विद्धि कुमारीगर्भसम्भवम्॥ ३१ -भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग, तृतीय अण्ड, द्वितीय अव्याय

क्योंकि विष्णु ने प्रसन्न होकर संस्कृत भाषा को अपशब्द करके न्युह के लिये प्रदान किया। उस भाषा का नाम म्लेच्छ भाषा रखा गया। ३ न्युह के ३ पुत्र हुये-सिम

हाम और याकुत। ३ यहाँ से भाषा परिवार बंटशा, सिम से सैमेटिक, हाम में हेंमेटिक। आदम का पूर्ववर्ती होने के कारण पुराणों का रचना काल आजसे ७२७९ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है, जो सर्वथा सम्भाव्य है, भले ही कुछ लोगों को आपत्ति हो। आदम के पहले अर्थात् पुराणों के काल में ४ वर्ण थे, परन्तु वे गुण और कर्म के विभाग से थे, न कि जाति के विभाग से। शूद्र ब्राह्मण बन जाता था, और ब्राह्मण भी शूद्र बन जाता था२। जब

प्रजाओं का पालक परमेश्वर एक है, जो दातिकृत भेद हो ही नहीं सकता।३ चलने-फिरने की क्रिया: शरीर, वर्ण, केश, सुख, दुःख, खून, त्वक, मांस, मेदा, अस्थि और रस की दृष्टि से तो सभी मनुष्य बराबर हैं, फिर मनुष्यों में जातिगत चार भेद क्यों हो सकते हैं? जैन्नावेद में चार-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शुद्र ये नाम आये हैं, उनका तात्पर्य यह नहीं है, कि वे जीति के सुचक हैं। उनका अर्थ हैकि गुण तथा कर्म के आधार पर चार वर्णों की स्थापना। चार वर्णों के कृत्यों में से जिसे जो अच्छा लगता था, उसी को वह स्वीकृत करता था।

इस प्रकार पुराणों के रचनाकाल एवं-चतुर्वस्था का वर्णन करके यह बतलाना आवश्यक समझताहूँ, कि पुराणों ने क्षेपक को स्थान नहीं क्योंकि भागवतपुराण में एक अध्याय में अट्टारहों पुराणों की श्लोक संख्या दी हुई है जिसके कारण एक भी श्लोक बढ़ाने का किसी को साहस ही नहीं।

अब मैं ईश्वर का नाम लेकर अन्तिम अवतार का विरण प्रस्तुत करूँगा जिसके लिये मुझे निर्देश विद्वद्वर्थ प्रोफेसर सरस्वती प्रसाद जी चतुर्वेदी भूत पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय तथा १००९ स्वामा श्री रामानन्द जी सरस्वती से मिला है, अतएव मे इन दोनों विद्यामूर्तियों का कृतज्ञ हूँ।

लेखक:

पं वेद् प्रकाश उपाध्याय,

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय।

१. विक्रमादित्यपौत्रशच पितुराज्यं गृहीतवान।

जित्वा शकान दुराधर्षा शचीनतैक्तिरिदेशजान ॥१॥

एतदा तु शकाधीशो हिमतु गं समाययौ।२१

-भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड

द्वितीय अध्याय

2.Panini (? G. 350 300) Encylopedia of world History By W.L. Langer, Page 42

3.Buddism was founded in the same period and pegin by Sidhartha (563 483) of the clan f Gautama and the hill of tribal of Sakya, who attained "Illumination" (bodhi)
Encylopedia of world History By W.L. Langer, Page 41

अवतार का अर्थ

-अवतार - शब्द - अव - उपसर्गपूर्वक - तृ - धातु में -घञ - प्रयास लगाकर बना है। अवतार शब्द का अर्थ यह हैकि पृथ्वी में आना । -ईश्वर का अवतार - शब्द का अर्थ हैकि -सब को सन्देश देने वाले मात्मा का पृथ्वी में जन्म लेना-। परमेश्वर सर्वव्यापी है, किसी निश्चित स्थान में उसका रहना और वहाँ से उसका कहीं आना जाना यह कथन उस असीम को सीमित बनाना है। कहीं उसका तेजविशेष रूप से चमकता है, कहीं उसका तेजसुव्यक्त नहीं होता, जैसे तुषाराच्छादित सूर्य का तेजमन्द दीखने लगता है, परन्तु उससे सूर्य के तेजकम नहीं होता। ऊपर के सात लोकों में सर्वोच्च लोक (अर्थात् सातवें आसमान) में उसकी उपलब्धि है, जहाँ न तो सूर्य ही चमकता है और न तो चन्द्रमा या तारों के दर्शन होते हैं। वहाँ पर ईश्वर का इतना अधिक प्रकाश (नूर) फैला हुआ है कि सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति उसके सामने क्या है। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से सभी ग्रह (---) प्रकाशित होते हैं। उसी प्रकार उस परमपिता परमेश्वर के तेजसे सभी प्रकाशित होते हैं। उसी से सम्बन्ध अर्थात् उनका कोई श्रेष्ठ (---) माहत्म लोगों का कल्याण करने के लिये जगतीतल में अवतीर्ण होता है, या जगतीतल में अवतीर्ण लोगो में से निर्मल हृदय एवं सच्चरित्र किसी के व्यक्ति में ज्ञान भर दिया है, और ईश्वर के तेजका उसे साक्षात्कार हो जाता है, जिसके कारण बिना अध्ययन किये हुए ही उसमें सर्वोत्कृष्ट ज्ञान भर जाता है। - ईश्वर का अवतार - शब्द में -का शब्द सम्बन्ध कारक का चिह्न है, अतः स्पष्ट ही हैकि ईश्वर से सम्बन्ध वही है, जो उसका भक्त है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति को -कीरि-कहा गया है। - कीरि-शब्द का अर्थ हिन्दी में -ईश्वर का प्रशंसक और आरबी में -अहमद- होता है। सन्देश यह उठता है, कि इस तरह तो जितने भी ईश्वर के प्रशंसक हैं, सभी अहमद कहे जाएँगे, परन्तु ऐसा नहीं है। ईश्वर की विशेष प्रशंसा करने वाले पर -कीरि -शब्द या -अहमद- शब्द रुढ़ हो गया।

तो जिस पर शब्द की जो रुढ़ि हो जाती है, उससे उसी का बोध हो जाता है। -आदम-भी तो ईश्वर के प्रशंसक थे, परन्तु उनका नाम -अहमद-नहीं हुआ। तात्पर्य यह निकला कि ईश्वर के सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्ति-कीरि-नहीं हो सकता। यहाँ हमें केवल अन्तिम अवतार का वर्णन करना है, न कि सन्देशों या अवतारों का इतिहास कहना। इतना तो कहना आवश्यक

समझता हूँ, कि -अवतार- शब्द संस्कृत भाषा में और -प्राफेट अंग्रेजी भाषा में तथा -नबी- अरबी भाषा में संसार के उद्धारकों के लिए प्रयोजनीय विश्रुत शब्द है। हर देश के लिये अलग-अलग अवतार हुए हैं, क्योंकि एक अवतार से सम्पूर्ण देशों का हित असम्भव है। परन्तु अन्तिम अवतार की बात और है, उसका जब उद्घाटन होता है, तब उसका धर्म संसार के सभी धर्मों में सन्निहित हो जाता है। अब हम -वतार - के कारणों पर विचार करते हैं-

१.-मनःशृणु ततो गाथां भार्वां सूतेन वणिताम्। कलेयुर्गस्य पूरार्णां तां तच्छ्रुत्वा तुष्टिमावह ॥

२. -द्विशाष्ट सहस्र - द्वे शेषे तु द्वापरे युगे।बहुकीर्तिमाती भूमिभविता कीर्तिमालिनी । २९।

इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यानपरायणः। तस्मादादमनामासौपत्नी हव्यवती तथा । २६।

-भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय

३. -म्लेच्छभाषा कृता तेन वेदवाक्यपराङ्मुखा।

कलेश्व वृद्धये ब्राह्मी भाषां कृत्वाऽशब्दगाम्॥ ३।

न्युहाय दत्तवन्देवो बुद्धीशो बुद्धिगः स्वम्। विलोमं च कृतं नाम न्यूहेन त्रिसुतस्य वै।

-भविष्य पुराण, पप्रति०, प्रथम० पंचम अध्याय फा--२

१. -यो रघस्य चोदिता यःकृशस्य, यो ब्रह्मणो नाधमनस्य कीरः -ऋ २-१२-६

२. हिन्दू - मुस्लिम एकता, लेखक सुन्दरलाल जी, पेज २६-३०

१. सिमश्च हामश्च तथा याकूतो नाम विश्रुतः ॥५॥

-भविष्य पु०, प्रति०, प्रथम०

पंचम आध्याय

२. शूद्रो ब्रह्मणतामेति ब्रह्मणश्चैति शूद्रताम्।क्षत्रियो याति विप्रत्वं विद्याद्वेश्यं तथैव च । ४७।

-भविष्य पु०, ब्रह्मर्ष, ४० आध्याय

३. स एक एवात्र प्तः प्रजानां, कथं पुनर्जातिकृतः प्रभेदः। प्रमाणहृष्टान्तनयप्रवादैः परीक्ष्यमाणो विघटत्वेति ॥४४॥

-भविष्य पु०, ब्रह्मर्ष, ४० आध्याय

४. पाद प्रचारैस्तुवर्णकेशैः, सुखेन दुःखेन च शोणितेन। त्वडमांसमेदो स्थिरसैः समाना-
श्चतुष्प्रभेदा हि कथं भवन्ति ॥४२॥

-भविष्य पु०, ब्रह्मर्ष, ४० आध्याय

१. न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं

नेमा विष्टुतो भाति कुतोऽय्यमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं

तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

-श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६, मन्त्र १४

अवतार के कारण

१. लोगों की अधर्म में प्रवृत्ति: और धर्म रे वास्तविक स्वरूप से दूर हो जाना।
२. मूलधर्म में मिश्रण (क्लृदञ्जित) कर लेना अर्थात् अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये धर्म में धर्माभास को मिला लेना।
३. धर्म के नाम पर अधर्म करना।
४. धर्म के स्वरूप से अनभिज्ञ लोगों को अधर्म का धर्म के रूप में उपदेश देना।
५. ईश्वर के भक्तों को कष्ट देना।
६. पापों एवं अत्याचारों का पढ़ना।
७. घोर हिंसा तथा अराजकता का फैल जाना।
८. अपने पेट तथा परिवार के पोषण तक ही धर्म को सीमित रखना।
९. ईश्वर द्वारा प्रदत्त उपभोग की वस्तुओं का विषमता से उपभोग।
१०. साधुओं की रक्षा करने के लिए एवं दुष्टों का संहार करने के लिए अवतार होता है।

(११) धर्म के विनाशोन्मुख होने पर अवतार होता है।

(१२) मारकाट तथा लूटपीट के बढ़ने पर अवतार होता है।

(१३) युगानुसार लोगों की प्रवृत्ति को देखकर तथा उनके लिये उपादिष्ट धर्म में विश्रुडलता देखकर धर्म के पुरातन सिद्धान्तों को नया पुर देकर उनसे पालन करवाने के लिये ।

उपयुक्त कारणों के उपस्थित होने पर अवतार होता है।

१. यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदातमानं सजाम्यहम्॥ -गीता

२ इस आज्ञा का खण्डन होने पर- ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्

तेन त्यक्तेन भु -था मा गृधः कस्यस्विध्नम।

यजुर्वेद, ४० अध्याय, मं. १.

३. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ -गीता

१. ब्रह्मणोऽस्य गुह्यमासीद् बाहु राजन्यः कृतः। उरु तदस्य यद्वेश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

ऋग्वेद १०-६०-१२, अथर्व. १६-६-, चा.य. ११-११:

तै. आ. ३-१२-५।

अन्तिम अवतर के कारण

अवतार के कारणों का संक्षिप्त विवेचन करके अब हम आपको अंन्तिम अवतार के कारणों से परिचित कराना चाहते हैं-

१. बर्बरता का साम्राज्य - लोगों में क्रूरता की भावना तथा अपनी आत्मा के महत्व को समझना तथा दूसरों के प्राणों की परवाह न करना । राजाओं में दुष्टता का संचार, करों का बढ़ा देना। सच्चे धर्म को बताने वालों ईंटों का प्रहार ।
 २. पेड़ों का न फलना फूलना, अगर फल फूल आएँ भी, तो बहुत कम ।
 ३. नदियों में जल की कमी ।
 ४. अधर्म की वृद्धि - दूसरों को मार कर उनका धन लूट लेना, अधिकतर लड़कियों को मार कर पृथ्वी में गाड़ देना ।
 ५. असमानता का प्रसार - समान का समाप्त हो जाना, ऊँच नीच छुआ - छूत आदी का प्रकोप ।
 ६. ईश्वर को छोड़कर अन्य की पूजा - यथापि सृष्टि का नियामक एक ही परमेश्वर है, परंतु उसको छोड़कर अन्य देवी देवताओं की पूजा, पेड़-पौधों एवं पत्थरों की भगवान मानने की प्रवृत्ति ।
 ७. भलाई की आड़ में बुराई - भलाई का आश्वासन देकर किसी को फँसा लेना और उसका अनिष्ट करना । इसी को कपट कहते हैं ।
 ८. ईर्ष्या - द्वेष बाह्य आडम्बरों का प्रसार - लोगों में सहानुभूति का अभाव हो जाना । आपस में एक दूसरे को शत्रुता के भाव से देखना ।
- ईश्वर के प्रति श्रद्धा का अभाव हो जाना, वेषभूषा केवल दिखावे के ही लिये हो कि वे ईश्वर के भक्त हैं ।
९. धर्म के नाम अधर्म करना - धर्म से हीनता और अधर्म से अनुराग ।
 १०. साधुओं की रक्षा करना - अच्छे लोगों की समाजमें दुर्गति देखकर उनकी रक्षा के लिये अंन्तिम अवतार ।
 ११. ईश्वराज्ञापालन का आभाव - लोगों वेदों के प्रति श्रद्धाहीनता, और उनकी आज्ञाओं का पालन न करना ।

अन्तिम अवतार की विशेषतायें

- (१) अश्वारोहण - पुराणों में अन्तिम अवतार के विषय में जहां कहीं भी वर्णन हुआ है उनकी सवारी अश्व (- -) ही बताई गई है। वह अश्व वेग से चलने वाला होगा। अश्व के विशेषण में देवता नाम आया है। देवदत्त का अर्थ है देवताओं द्वारा दिया गया।
- (२) खड्गधारण - अश्वारोहण के अतिरिक्त अन्तिम अवतार को खड्गधारी भी बताया गया है। दुष्टों का संहार अन्तिम अवतार के द्वारा तलवार से है न कि एटम बम्ब आदि से विचारणीय है कि यह समय अणुयुग है, न कि तलवार का युग। अवसर की सबसे बड़ी विशेषता है कि अपनी वेशभूषा तथा अस्त्र देश, काल और पात्र के अनुसार रखता है। वह जिजाति या वर्ग में पैदा होता है, उस जाति के अनुरूप उसकी वेशभूषा भी रहती है।
- (३) अष्टैश्वर्यगुणान्वित - उसमें आठों सिद्धियाँ एवं अच्छे - अच्छे गुणों का सन्निधन पुराणों में बताया गया है।
- (४) जगत्पति - पति शब्द पा, (रक्षा करना धातु में - डति - प्रत्याय के संयोग से बना है। जगत का अर्थ है संसार, अतः जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ, संसार ही रक्षा करने वाला।
- (५) असाधुदमन - अन्तिम अवतार की सबसे प्रशंसनीय विशेषता यह है कि वह दुष्टों का ही दमन करेगा न कि अच्छे लोगों का।
- (६) चार भ्राताओं के सहयोग से युक्त - भ्राता: शब्द का अर्थ है सहायक। अन्तिम अवतार के सहायक चार होंगे, जो हर तरह से उसे सहायता देंगे।
- (७) देवताओं द्वारा उसकी सहायता - धर्म के प्रचार एवं दुष्टों का दमन करने में सहायता देने के लिये देवता भी आराध से उत्तल आएँगे।

१. -अश्वमाशुगमाकरुह्य देवदत्त जगत्पतिः।

असिनासाधुदमनमष्टैश्वर्यगुणान्वितः। - - भागवत पु. १२-२-१६ आठ ऐश्वर्यों और गुणों से युक्त जगत्पालक देवताओं द्वारा दिये गये वेगगामी अश्व पर चढ़कर तलवार से दुष्टों का दमन करेंगे।

- (८) कलि का निराकरण करने वाला - जिस अर्थ में - कलि शब्द प्रयुक्त होता है, उसी अर्थ में शैतान शब्द भी प्रयुक्त होता है। अन्तिम अवतार के द्वारा कलि अर्थात् शैतान की पराजय होगी।

- (९) अ - तिमद्युति - अन्तिम अवतार के शरीर में इतनी अधिक कान्ति रहेगी, उसकी उमा नहीं दी जा सकती, ' और न उनके समान कान्ति मान और कोई अवतार ही हुआ ।
- (१०) राजाओं के देश में छिपे हुए दस्युओं का विनाश अन्तिम अवतार के विषय में यह भी भगवत पुराण में है कि वह राजाओं के वेश में छिपे हुये दस्युओं का संहार करेगा ।
- (११) शरीर से सुगन्ध का निकलना - अनन्तिम अवसर के शरीर के से सुगन्ध निकलेगी, जो हवा में मिल कर लोगों के मन को निर्मल करेगी ।
- (१२) बहुत बड़े समाजका उपदेशक बनना - अन्तिम वतार बहुत बड़ा समाजका कल्याणकारी होगा । धर्म से दूर अत्याचारीयों का दमन करके उन्हें सीधे रास्ते पर लगाएगा ।
- (१३) माघवमास की द्वादशी शुक्ल पक्ष को जन्म - अन्तिम अवतार का जन्म शुक्लपक्ष की बारहवीं तिथि को माघवमास (वैशाख) में होगा । यह कल्कि पुराण से विदित है।
- (१४) शम्भल के प्रधान पुरोहित के यहां जन्म-शम्भल स्थान प्रमुख पुरोहित विष्णुयशा के यहाँ जन्म होगा और माता का नाम सुमति होगा । ये सभी विशेषताएँ अन्तिम अवतार में होंगी ।

१. -विचरन्नाशुना क्षोणायां हयेना प्रतिमद्युतिः ।

नृपाङ्गलच्छदो दस्यून्कोटिशोहनिष्यति ॥

भगा. पु. १२-२-२०

वेगगामी अश्व से पृथिवी में विचरतें हुए अप्रतिम कान्ति वाले वह राजाओं के वेश में छिपे करोड़ों दृष्टों का संहार करेगे ।

२. -अथतेषां भविष्यन्ति भनांसि विशदानि वै। वासुदेवांगरातिपुणायगन्धनिलस्युशाम ॥

भागवत पु. १२ स्कन्ध, २ अध्याय, २१ वां श्लोक

३. द्वादशयों शुक्लपक्षस्य माधवे मासि माधवमः । जादो ददृशतुः पुत्र पतिरौहृष्टमानसी ॥

-कान्कि पुराण, द्वितीय अध्याय, १५ वां श्लोक ।

अन्तिम अवतार का समय

भारतीय धर्मग्रन्थों ने समय को चार भागों में विभाजित किया है।

- (१) सत्ययुग - इस युग का नाम कृतयुग है। इसकी अवधि सत्रह लाख अट्ठाइस हजार वर्ष है।
- (२) त्रेतायुग - सत्युग के बाद त्रेतायुग आता है। त्रेतायुग का समय बारह लाख छियानवे हजार वर्ष तक है।
- (३) द्वापर युग - त्रेतायुग के बाद द्वापर युग आता है, इसकी अवधि आठ लाख चौसठ हजार वर्ष है।
- (४) कलियुग - कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हजार वर्ष है। अवतार भविष्य में होगा परन्तु अवतार के पूर्व ही अत्याचारों से दब कर पृथ्वी जलमग्न हो जाय, तो भावी अवतार से लाभ ही क्या? गीता में भी कहा गया है, कि जब जब धर्म की हानि होती है और धर्म की वृद्धि होती है, तब तब अवतार होता है।

१. शम्भलग्राममुख्यस्य ब्रह्मणास्य महात्मनः ।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रदुर्भविष्यति ॥

-भागवत पु. १२.२.१८

२. शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रदुर्भवाम्यहम् ।

-कल्कि, अध्याय २, श्लोक

-मत्वा विष्णुयशसा गर्भमाघत वैष्णवम् ।

-कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ११

साधुओं की रक्षा के लिये तथा दुष्टों के संहार के लिए, एवं धर्म की स्थापना के लिये युग २ में अवतार होता है। अब यह देखना है, कि जिन जिन परिस्थितियों के बाद अवतार होता है, क्या वे परिस्थितियाँ बीत चुकीं या बीत रहीं हैं? इतना तो निश्चित ही है अन्तिम अवतार कलियुग में होगा, और कलियुग को आरम्भ हुये आजसे पांच हजार उन्हत्तर वर्ष हो गये। अन्तिम अवतार का समय कलियुग के प्रायः बीत जाने पर या कुछ बीत जाने पर है। परिस्थिति वह रहोगी, कि केवल अपना ही पेट पालना लोगों को अभीष्ट रहेगा।

दूसरी बात देने की यह है कि अन्तिम अवतार उस समय होगा जब कि युद्धों में तलवार का प्रयोग किया जाता हो. और सवारियों में अश्व का प्रयोग होता हो। क्यों कि भागवत पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा दिये गये वेगगामी अश्व पर चढ़कर आठों ऐश्वर्यों एवं गुणों से युक्त जगत्पति तल्व से दुष्टों का दमन करेंगे। यह तलवारों और घोड़ों

का युग नहीं है, यह तो अणुबम्ब एवं टैंको आदि का युग है। तलवार एवं घोड़ों का समय समाप्त हो चुका, हैअतः अन्तिम अवतार की स्थिति तलवारों एवं घोड़ों के युग में ही होनी सिद्ध होती है।

१. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारता।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सजाम्यहम्॥

-भागवद् गीता

२. गतकालः ५०६६ पंचांग २०२५ सं.

३. इत्थं कलौ गत प्राये जनेषु खरधर्मणि।

धर्मत्राणाय सत्वेन भगवानवन्तरिष्यति॥ -भागवत पु १२ स्कन्द, २ अध्याय, १७ वां श्लोक।

४. अश्वमाशुगमरुहा देवदत्तं जगत्पतिः।

असिनासधुदमनमष्टैश्चगुणान्वितः। -भागवत रु. १२ स्कन्द, २ अध्याय, १६ वां श्लोक।

आजसे लगभग १४०० वर्ष पहले घोड़ों तथा तलवारों का प्रयोग होता था और उसके लगभग १००वर्षों बाद से बारुद का निर्माण सोडा और कोयला के संयोग से अरब में होने लगा।

जन्मतिथि का भी निरूपण होना आवश्यक है। कल्किपुराण में अन्तिम अवतार का समय माघव मास, शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि दिया गया है।

स्थान निरूपण

यह तो निविवाद सिद्ध हैकि अन्तिम अवतार का स्थान शम्भल ग्राम होगा। केवल ग्राम के नाम से ही सन्तोष नहीं होता, जब तक कि उसका पूरा विवरण न हो या किसी ग्राम का विशेषण।

शम्भ किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्रामविशेष को शम्भल नाम दिया गया होता तो उसकी स्थिति भी बतलाई गई होती। परन्तु पुराणों में कहीं भी शम्भल ग्राम की स्थिति नहीं बतलाई गई है। भारत में खोजने पर यदि कई शम्भल नामक ग्राम मिलता है, तो वहाँ आजसे लगभग चौदह कौवर्ष पहले कोई पुरुष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उध्दारक हो। फिर अन्तिम अवतार कोई खेल तो नहीं हैकि अवतार हो जाय और समाजमें जरा सा परिनर्तन भी न हो, अतः -शम्भल- शब्द को विशेषण मान कर उसकी व्युत्पत्ति पर विचार करना आवश्यक है।

१.-शम्भल- शब्द -शम- (शान्त करना) धातु से बना है। अर्थात् जिस्थान में शान्ति मिले।

२. सम उपसर्गपुवक-वृ- धातु में अप प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द - संवर- हुआ। - ववयोरभेदः और -रलयोरभेदः - के लिध्दान्त से शम्भल शब्द की निष्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ जो अपनी ओर लोगों को खींचता हैया जिसके द्वारा किसी को चुना जाता है।
- ३.-शम्भल-शब्द का निघण्टु (१-१२-८८) में उदकनामों में पाठ है। -र- और-ल-में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीपवर्ती स्थान।

लोगों को यह सन्देह होगा जब -शम्भल-का अर्थ निकल रहा है, तो जल का समीपवर्ती स्थान या गांव अर्थ क्यों लिया गया? इसके उत्तर में मैं इतना ही बतला रहा हूँ कि प्रसंग यहाँ ग्राम का हैन कि जल का जब गंगा में घोष शब्द से आप यह अर्थ करते हैं, कि गंगा के समीप स्थित गांव में घोष, न कि गंगा के जल के ऊपर घोष, तो आप शम्भल शब्द से वैसे ही क्यों अर्थ नहीं निकाल लेते? यदि गंगा में घोष, वाक्य में लक्षण मानते हैं। तो यहाँ भी लक्षण मानिये।

अन्तिम अवतार के स्थान के निषय में केवल इतना ही विचारणाय हैकि वह स्थान, जिसके आस पास जल हो, और वह स्थान आकर्षक एवं शान्तिवायक हो। अवतार की भूमि पवित्र होती है, अतः उस स्थान में भी पवित्रता होनी चाहिये और हिंसा आदि नहीं होनी चाहिये। साथ ही साथ वह स्थान एक तीर्थ होना चाहिये अर्थात् लोगों का धार्मिक स्थान हो।

१.द्वादश्यां शुक्ल पक्षस्य, मायवे मासी माधवमा। जातं.....॥ कल्कि पु. अध्याय २, श्लोक १५।

२. -शम्भले विष्णुयससो गृहे प्रदुर्मयाम्यहम-। -कल्कि पु. अध्याय २, श्लोक ४।

-शम्भल- का शाब्दिक अर्थ है-- शान्ति का स्थान-, अन्तिम अवतार का स्थान शान्तिदायक, हिंसा और द्वेष से रहित होना चाहिये। अन्तिम अवतार के लिये आवश्यक नहीं कि वह भारत में ही हो और संस्कृत या हिन्दी ही बोले। भाषा, वेशभूषा तो केवल देश-काल-पात्र के अनुसार होती हैं। यदि अवतारों के लिये एक ही प्रकार की भाषा, वेशभूषा तथा एक ही भाषा नां प्रयुक्त होते तो सभी देशों के अन्दर होने वाले अवतारों की भाषा तथा वेशभूषा एक ही होती। यह कहना अज्ञानता है, कि अवतार केवल भारत में ही हो। क्या भारत ही ईश्वर का प्रिय स्थान है, और अन्य देश नहीं, अथवा क्या सृष्टि केवल भारत ही हैऔरदूसरे देश नहीं।

अतः अन्तिम अवतार भारत से बाहर भी हो सकता है और वहाँ उस देश की भाषा, रीति-रिवाज तथा वेषभूषा के अनुरूप उसको चलना होगा, परन्तु अधर्म एवं अन्याय के विरुद्ध।

समय को दृष्टि में रखते हुये इतना तो स्पष्ट ही है, कि भारत में आजसे लगभग तेरह-चौदह सौ वर्ष पूर्व कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ, जो अन्तिम अवतार की कसौटी पर खरा उतरे।

जितने भी पुराण हैं, कल्कि के अवतार के विषय में सभी स्थान को -सम्भल-बतलाते हैं। सम्भल-या-शम्भल- शब्द एक ही हैं। अन्तिम अवतार की सिद्ध प्रकरण में स्थान आदि का निर्धारण किया जायेगा। संसार के सामाजिक और धार्मिक पतन का काल प्रत्येक महापुरुष के जन्म के पहले काफी संकटों की परिस्थिति आती है या यों कहिये कि कष्टमय दशाओं के बाद ही ईश्वर किसी महापुरुष

नोट:- वाचस्पत्यम- के अनुसार शम्भल में ६० तीर्थ हैं। वहाँ पर लात मनात नामक तीर्थ की भी स्थिति कुछ विद्वानों ने बतलाई है।

लात मनात तथा कनात आदि ६० प्रसिद्ध मूर्तियों की प्राप्ति का स्थान शम्भल है, ऐसा मुसलमान विद्वान मानते हैं। मुसलमान विद्वान दारुल अमन को ही शम्भल कहते हैं। को भेज देता है। भारत की भी दशा आजसे सगभग दो हजार वर्ष पहले खराब थी। प्राचीन भारत के इतिहास में सबसे अधिक अन्धकार और अत्याचारों का युग है जो लगभग पाँच सौ ईसवी से प्रारम्भ होता है। वैदिक काल में मूर्तिपूजा का अभाव था, परन्तु इस समय मन्दिरों में मूर्तिपूजा का सर्वसाधारण प्रचलन और स्थापन हो गया था। मन्दिरों के पुजारी तरह-तरह की त्रुटियों का उद्गम बने, जो धार्मिक आडम्बरों से भोले-भाले यात्रियों को लूटते थे।

1. A History of Civilisation in Aciend India, Vol. 3 Page 291
2. A History of Civilisation in Aciend India, Vol. 3 Page 243
3. A History of Civilisation in Aciend India, Vol. 3 Page 308
4. A History of Civilisation in Aciend India, Vol. 3 Page 331
5. A History of Civilisation in Aciend India, Vol. 3 Page 342-343

वैदिक काल में सारी हिन्दू जाति में एकता तथा समानता का व्यवहार होता था, लेकिन अब जाति-पाँती के कारण अन्तरंग भेद-भाव का बोलबाला हो गया था। वैदिक काल से वर्ण-व्यवस्था, जो स्वेच्छाय अपमाने पर थी अब जाति व्यवस्था बन गई थी। इससे

सामाजिक संगठन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। स्त्रियों को दासता का पद प्रदान किया गया। विधान इस प्रकार का बना जो प्रत्यक्ष रूप से पक्षपातपरक था। ब्राह्मण चाहे कितना ही अत्याचाप क्यों न करे, मृत्यु दण्ड का भागी कभी नहीं होता था। निम्न जाति द्वारा उच्च वर्ग की पत्नी से व्यभिचार मृत्यु के दण्ड को दिलाता था, तथा उच्च जाति द्वारा निम्न जाति की पत्नी के साथ व्यभिचार करने से कुछ अर्धदण्ड दिया जाता था। यदि निम्न जाति का पुरुष उच्च जाति के पुरुषों को उपदेश दे, तो गरम तेल उसके मुख में छोड़ने का विधान था, गाली देने पर जीभ काटने का विधान था। शराब पीना राजाओं के महत्व की बात थी, और राजमहिषी भी शराब के नशे में मदमस्त घूमती थी। मार्गों पर व्यभिचारियों का जमघट लगा रहता था। ईश्वर की खोजजंगलों और पहाड़ों में की जाती थी। काल्पनिक और मनगढ़व्त विचारों का एवं भूत प्रेतों की पूजा का धर्म था।

सम्भवतः इतनी बुरी अवस्था रोमन और पर्सियन सम्राज्य की पहले कभी नहीं थी, जितनी सातवीं शताब्दी के प्ररम्भ में हुई। बाईजेण्टाइन सम्राज्य के क्षीण हो जाने से सम्पूर्ण शासन भ्रष्ट हो चुका था और पादरियों के दुष्कर्मों और दुष्टताओं का परिणाम यह हुआ कि ईसाई धर्म बहुत गिर गया, और इतनी खराब परिस्थिति हो गई कि आजउसकी वैसी कल्पना नहीं की जा सकती। उन बुरी परिस्थितियों को यदि आजस्पष्ट किया जाय, तो शायद कोई उस पर विश्वास न करे। यद्यपि उन बुराद्वयों का ऐसा प्रबल प्रमाण है, कि सन्देह लेशमात्र भी नहीं रह सकता। पारस्परिक संघर्षों और शत्रुता के कारण समाजमार्ग को भुल चुका था। शहरों और कसबों में रक्त की धारा बहती थी। ईसामसीह ने सच ही कहा था, कि मैं शान्ति नहीं लाया हूँ, अपितु तलवार लाया हूँ।

1. A History of Civilisation in Aciient India, R.C. Dutt, Vol. 3 Page 469
2. A History of Civilisation in Aciient India, R.C. Dutt, Vol. 3 Page 469
3. Perhaps in no prevision had the empire of the persian or the oriental part of Roman empire been in a more deloparable or unhappy state than at the beginning Byzantine despots the frameof their government was in a state of complete dis-organization of the most frightful abuse and corruption of the priests, the Christian religion had fallen into a state of degradation scarcely at this day conciveable and such as would be absolutely incredible had we not evidence of it the most unquestionable, the feuds and animosities of the almost.

इस समय अरब के एक भाग में मोहम्मद साहब का धर्म उठा, जो रोमन साम्राज्य के संघर्षों से दूर था। इस धर्म के भाग्य में यही लिखा था कि यह तूफान की तरह से सम्पूर्ण पृथ्वी में

छा जायगा, और पने समक्ष बहुत से सम्राज्यों, शासकों और प्रथाओं को इस तरह उड़ा देगा, जैसे कि आँधई मिट्टी को उड़ा देती है।

अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से यह भी सिद्ध है मोहम्मद साहब के जन्म के पहले ईसाइयों में कितनी बुराईयाँ फैल गई थीं। इसी प्रकार सेल ने कुरआन के अनुवाद की प्रस्तावना में लिखा है-गिरजाघर के पादरियों ने धर्म के टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे, और शांति प्रेम एवं अच्छाईयाँ उनमें से दूर हो गई थीं। वे मूल धर्म को भुल गये थे। धर्म के विषय में अपने तरह-तरह के विचार बनाये हुये परस्पर कलह करते-रहते थे। इसी पृथ्वी में रोमन गिरजाधरों में बहुत सी भ्रम की बातें धर्म के रूप में मानी जाने लगीं और मूर्तिपूजैबहुत ही निर्लज्जता से जाने लगीं।

Innumerable sects and risen to the greatest ; the whole frmae of society was loosened ; the town and eities flowed blood. Well, indeed, had Jesus prophesied when he said he brought not peace, but a sword:.

'Apology for Mohamed' by Godfrey Heggins.

page 1

1. "At this time, in a remote and almost unknown colner of Arabia, at a distance from ciril broils which were tearing to prices of Roman empire, arose the region f Mohamed it religion destined to sweep like a tormodo over the face of the earth to carry before it empires, kingdoms and systems, and to scatter them like dust before the wind."

page 2.

2. Transaction of Holy, by George Sale. First translation/Preface on pages 25/26

मोहम्मद साहब से पहले ईसाई धर्म और मूर्तिपूजा दोनों ने मिल कर एक. नवीन रूप धारण कर लिया, जिसके कारण ईसाइयों में मूर्तिपूजा सामान्य हो गई. और एक ईश्वर के स्थान पर तीन ईश्वर माननीय हो गए और मरियम (ईसामसीह की माँ) को ईश्वर की माँ समझा जाने लगा।

अन्तिम अवतार सिध्द

उपुक्त विवरणों में यह तो स्पष्ट ही किया जा चुका है, कि कल्कि अशवारोंही तथा खड्गधारी होगा। तलवार एवं अश्व का समय बीत चुका है, और अब तो जेट विमानों एवं अणुअस्त्रों का युग आ गया है। अन्तिम अवतार के पूर्व की परिस्थितियां भी सिध्द हो चुकी हैं. कि धर्म की हानि और अर्धम एवं अत्याचारों की वृद्धि होने पर अन्तिम अवतार की प्रक्रिया होगा। अब हम कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब का तुलनात्मक अध्यन उपस्थित करते हैं।

(१) अश्ववारोहण एवं खड्गधारण - भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध द्वितीय अध्याय के उन्नीसवे श्लोक से कल्कि का देवताओं द्वारा दिये गये अश्व पर चढ़ना एवं दलवार द्वारा दुष्टों का संहार करना उल्लिखित है। कल्कि का घोड़ा जो देवताओं द्वारा उन्हें दिया जायगा बहुत उत्तम रहेगा, उसी पर चढ़कर वह दुष्टों का संहार करेंगे। मोहम्मद साहब को भी फरिश्तों द्वारा घोड़ा मिला था, जिसका नाम बुराक था,

उस पर बैठकर मोहम्मद साहब ने रात्रि को तीर्थयात्रा की थी। मुहम्मद साहब को घोड़े अधिक प्रिय थे। और उनके सात घोड़े थे। अनस ने कहा कि मैंने मुहम्मद साहब को देखा कि घोड़े पर सवार थे और गले पर तलवार लटकाये हुये थे। (२) कुल परम्परा से प्राप्त (२) जुलफिकार नामक तलवार और (३) कलाई नाम वाली तलवार।

(२) जगद्गुरु - भागवतपुराण में अन्तिमक को जगत्पति कहा गया है। जगत का अर्थ हैसंसार और पति का अर्थ हैरक्षक। जगत्पति शब्द का अर्थ हुआ कि अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुये समाजको बचाने वाला। वह समाजकोई सीमित समाजतो हैनहीं, वह समाजहैसंसार। तात्पर्य यह हुआ कि जगद् का गुरु। मुहम्मद साहब के लिये भी कुरान में कहा गया है, कि -ऐ मोहम्मद लान कर दो सारी दुनिया भर के लिये नबी

Picture of Buraq

बुराक घोड़ा, जिस पर मुहम्मद साहब ने बैठकर तीर्थ यात्रा की थी होकर तुम आये हो। दूसरी जगह यह भी कहा गया है कि बड़ी पवित्र है वह जाति, जिसने अपने भक्त पर पवित्र ग्रन्थ उतारा, ताकि सम्पूर्ण संसार के लिये वह पपों का डर दिखाने वाला हो।

इस प्रकार जगद गुरुत्व का अस्तित्व एवं महत्व दोनों पर ही सिद्ध होता है।

(३) असाधुदमन -कल्क के विषय में उल्लेख है कि वह दुष्टों का दमन करेंगे। यही बात मुहम्मद साहब पर भी घटित होता है। उन्होंने भी दमन किया, तो दुष्टों का ही। कुरआन में भी यह कहा गया है, कि जिनको कत्ल किया गया है, उनको आज्ञा दी जाती कि वे भी लड़े, इस कारण से कि उन पर अत्याचार किया गया है, और परमेश्वर उनकी सहायता पर पूरी शक्ति रखना है। जो लोग अपने घरों से निकाले गये, केवल इस बात पर कि ईश्वर उनका पालक है। मोहम्मद साहब ने लुटेरों और डाकुओं को सुधार कर उन्हें एकेश्वरवाद की शिक्षा दी, तथा ईश्वर की पूजा में और देवताओं के मिश्रण का विरोध किया तथा मूर्तिपूजा का भी खण्डन किया। उन्होंने जिस धर्म की स्थापना की, उसके विषय में कहा कि मैं प्राचीन धर्म को ही स्थापित कर रहा हूँ, कोई यह नया धर्म नहीं। -इस्लाम- शब्द का अर्थ है, ईश्वर की आज्ञा पालन कराने वाला धर्म और वेद शब्द भी ईश्वरीय वाणी है और उनकी आज्ञा पालन कराने वाला धर्म वैदिक है, वैदिक धर्म और इस्लाम धर्म में साम्य है जो वैदिक या इस्लाम धर्म के मार्ग में बाधक है, उन्हें नास्तिक या काफिर

1. The picture of Burak was published in organise, february 8, 1969
2. 'He Explained to Ommehani daughter of Abu Talib taht during the night he had petroformed his devotions in the temple of Jerusdalem. He was going forth to make his vision known, when she confijured him not thus to expose himself to the derision of the unbelievers'
'Life of Mohomet', by Sir William Muir, page 125
3. Asah us- siyar page, 565 Jamaul Favaid, Vol. 2, page 179
४. बुखारी की हदीस ५. असहूसियर, पेज ५६६
६. भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध -द्वितीय आध्याय, १६ वां श्लोक

कहा जाता है, उसे विरोध की बात और उनके दमन की बात स्वाभाविक ही है।

१. कुरआन, सूरे एराफ, आयत नं. १५९ २. कुरआन, सूरे फुरकान, आयत नं. १

जिस परिस्थिति में मोहम्मद साहब का जन्म हुआ, वह परिस्थिति डाकुओं और से दुष्टों से युक्त थी। लड़कियों को कत्ल कर दिया जाता था।

उनके जन्म के पहले ईरान में तो कुबाद प्रथम बादशाह हुआ था, जो भज़क के उपदेश से प्रभावित होकर यह घोषित कर चुका था कि धन और औरत सभी की हैं, उन पर किसी व्यक्ति विशेष का आधिकार नहीं। इसी के परिणाम स्वरूप व्यभिचार आपनी सीमा को पार कर चुका था। बाद में मोहम्मद साहब ही ऐसे व्यक्ति हुये जिनके वर्ग ने उन आतताइयों को पराजित करके धर्म की मर्यादा स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

(४) स्थान सम्बन्धी साम्य -कल्कि का स्थान शम्भल होगा, और वह वहाँ के पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे। पुरोहित का नाम विष्णुयस होगा। इतना तो ज्ञात ही है कि उक्त नाम संस्कृत भाषा के हैं, जो या तो अर्थ को निर्धारित करके लिखे गये हैं, या तो उन नामों का विकृत रूप अरबी भाषा में हो गया है।

संस्कृत प्रायः अर्थप्रधान नामों को महत्व देता है, अतएव उन नामों के अर्थ को ही स्वीकार करना अधिक उपयुक्त है।

-शम्भल- शब्द- शान्त करना -अर्थ वाली शम भातु से बना हुआ है, जिसमें -बन -प्रयास लगा हुआ है। शम्भल शब्द का अर्थ होगा -शान्ति का घर- और मक्का को अरबी भाषा में - दरुदलअमन- भी कहा जाता है, जिसका अर्थ - शान्ति कर घर- हैं।

१. सिरतुन्नबी, बाल्यूम ४, पेज २१५ २. -शम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणास्य महात्मन)।

भवने विष्णुयशसः, द्वादश स्कन्ध, २ अध्याय, १८ वां श्लोक

५. प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म - कल्कि के विषय में यह कहा गया है कि वह प्रधान

पुरोहित के यहाँ जन्म लेंगे। मोहम्मद साहब भी मक्का में काबा के प्रधान पुरोहित के यहाँ जन्म लिये।

६. माता पिता सम्बन्धी साम्य-कल्कि की माता का नाम कल्कि पराण में सुमति (मोमावती) आया हुआ है जिसका अर्थ है, शान्ति एवं मनन शील स्वभाव वाली। पिता का नाम विष्णुयश आया है, जो बहुत ही पवित्र तथा ईश्वर का उपासक होगा, मोहम्मद साहब की माता का भी नाम आमिना -था जिसका अर्थ होता है, शान्ति (अमन) वाली तथा पिता का नाम -अब्दुल्लह- था। अब्दुल्लह का अर्थ है अल्लह अर्थात् विष्णु का बन्दा।

७. अन्तिम अवतार की धारणा में साम्य- कल्कि को अन्तिम युग का अन्तिम

अवतार है, मोहम्मद साहब ने भी घोषणा की है, कि मैं अन्तिम सन्देश हूँ। यही कारण है कि मुसलमान भावी किसी सन्देश या अवतार को नहीं मानते।

८-कल्कि - शब्द का अर्थ- वाचस्पत्यम्- तथा- शब्दकल्पकर- में अनार का फल खाने वाले तथा कलंक को धोने वाले किया गया है। मोहम्मद साहब भी नार और खजूर का फल खाते थे, तथा प्राचीन काल से आगत मिश्रण (शर्क) और नास्तिकता (कुफर) को धो दिये।

१. कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा, विष्णु-अल्लह, यश-बन्दा यानी अब्दुल्लह, कल्कि अवतार की माता का नाम सुमति (सोमवती) होगा। सोमवती - अमन व सलामती वाली यानी अमिना। इसका पिता इसकी पैदाइश से पहले फौत हो जायेगा और बाद में माता भी फौत हो जायेगी तारीख ने इसकी तारीख की सरवरे आलम, पेज १० से ११

२. भगवतपुराण के २४ अवतार के प्रकरण में कल्कि सबसे अन्तिम अवतार है। -भा.पु.प्रथम स्कन्ध, तृतीय अध्याय, २५ वाँ श्लोक।

९. उत्तरदिशिगमन तथा उपदेश. सम्बन्धी साम्य -कल्कि पुराण में उल्लिखित है, कि कल्कि पैदा होने के बाद पहाड़ी की तरफ चले जायेंगे और यहाँ परशुराम जी से ज्ञान प्राप्त करेंगे बाद में उत्तर की तरफ जाकर फिर लौटेंगे। मोहम्मद साहब भी जन्म लेने के कुछ समय बाद पहाड़ियों की तरफ चले गये और वहाँ ज़िब्रील द्वारा ज्ञान प्राप्त किया, अर्थात् उन पर कुरआन को आयतों को उतरना शुरू हुआ। उसके बाद वे उत्तर मदीने जाकर वहाँ से फिर दक्षिण की ओर लौट आये और अपने स्थान को विजित किये, यही घटना कल्कि के विषय में भी घटने की पुराणों द्वारा घोषणा है।

६. शिव द्वारा कल्कि को एक घोड़ा दिया जाना - शिव कल्कि को एक घोड़ा देंगे जो बहुत ही चमत्कारों से युक्त होगा। मोहम्मद साहब को भी बुराक नाम का चमत्कारी घोड़ा मिला था, जो ईश्वर से उन्हें प्राप्त हुआ था।

१. सरवरे आलम, पेज १०

२. -परशुराम कल्कि अवतार को गुफा में ले जाकर तालीम देंगे, परशुराम - ज़िब्रील, या रुहुलकुदश। गुफा - गार यानी गारेहिरा का वाक्या। सरवरे आलम, पेज ११

कल्कि अवतार अपने बतन से उत्तर पहाड़ी की तरफ चले जाएँगे, लेकिन कुछ अरसे बाद वह फिर उसी शहर में आएँगे और सारा मुल्क फतेह करेंगे। यो हिजरत और फतेह मक्का की तरफ इशारा है।

सरवरे आलम, पेज ११

३. शिव कल्कि अवतार को एक घोड़ा देंगे अजीब गरीब पिफ्त खता होगा। शिव - खुदा और घोड़ा का इशारा बुराक की तरफ है।
-सरवरे आलम, पेज ११

१०. चार भाइयों के साथ कलि का निवारण - कल्कि पुराण में उल्लेख है कि १ चार भाइयों के साथ कल्कि कलि (शैतान का निवारण करेंगे)। मोहम्मद साहब ने भी चार साथियों के साथ शैतान का निवारण किया था। ये चार साथी थे (१) अबूबक्र, (२) उमर (३) उस्मान और (४) अली।

बाद में ये ही खसिफे हुये जिन्होंने मोहम्मद साहब के एकेश्वरवाद और आडम्बर विहीन धर्म का प्रचार किया।

११. देवताओं द्वारा सहायता - कल्कि पुराण में उल्लेख है, कि देवताओं द्वारा कल्कि को युद्धों में, सहायता मिलेगी। यही बाद मुहम्मद साहब के भी विषय में हुई कि बद्र की लड़ाई में फरिश्ते उनकी सहायता के लिए उतरे।

कुरआन में लिखा है कि अल्लाह ने तुमको बद्र की लड़ाई में मदद दी और तुम बहुत कम तादाद (संख्य) में थे, तो तुमको चाहिये की तुम अल्लाह ही से डरी और उसी के शुक्रगुजार होओ। जब तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिये काफी नहीं हैं कि तुम्हारा रह तुमको तीन हजार फरिश्ते भेजकर मदद करे, बल्कि अगर तुम सब करो और अल्लाह से डरते रहो।

१. -चतुर्भिर्भृतृभर्देव करिष्यामि कलिक्षयम् -कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ५।

२. 632 A.D. to 661. A.D. The orthodox caliphate including the first four Calibhs.
Encyclopedia of World's History. by W.L. Langer page 184

३. यात यूयं भुवं देवाः स्वाशावतरणे रतः। -कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक ७।

तो अल्लाह तुम्हारी मदद पाँच हजार फरिश्तों से करेगा। जब तुमने अपने रब से मदद माँगी, तो तुम्हारे रब ने मन्जूर किया कि मैं तुम्हारी लिये एक हजार फरिश्ते मदद को भेजूंगा।

ऐ ईमान वालों, अल्लाह की उस कृपा का स्मरण करो, जब तुम्हारे विरुद्ध सेनायें आई तो हमने भी उनके विरुद्ध पवन और ऐसी सेनायें भेजी, जिनको तुम नहीं देखते थे, और जो कुछ तुम कर रहे थे, वह अल्लाह देख रहा था।

१२ अनुपमकान्ती से युक्त - कल्कि के विशय में उल्लेख है कि वे अनुपम कान्ति से युक्त होंगे, अर्थात् वे इतने अधिक सुन्दर होंगे कि उपमा नहीं कीजा सकती

मोहम्मद साहब के भी विशय में कहा गया हैकि मोहम्मद साहब सभि आदमियों में अधिक सुंदर थे और सभि आदमियों में अधिक आदर्शवान एवं योद्धा थे.

१३. जन्मतिथि सम्बन्धी साभ्य - कल्कि पुराण में कल्कि के जन्म की तिथि के सम्बन्ध में लिखा हैकि माघव मास में शुक्लपक्ष द्वादशी को जन्म होगा। और मोहम्मद साहब का जन्म भी बारह रहीउल अव्वल को हुआ था।

१. कुरआन,सुर: साल इमरान आयात नं. १२३,१२४,१२५

२ कुरआन,सुरे अनफल, आयात नं. ६ ३. कुरआन,सुर: अहजाव, आयात नं. ६

४. -विचरन्नाशुना क्षोणयां हयेनाप्रतिमद्युति।।

-भागवत पुराण, द्वादश स्कन्ध, द्वितीय अध्याय, २० वां श्लोक।

५. जम उल फवायद पेज १७६ बोखारी की हदीस में अनस का बयान।

६. -द्वादयाँ शुक्लपक्षस्य माघवेमासि माघवम -कल्कि पुराण, अध्याय २, श्लोक १५।

बाराह रबीउल अव्वल का अर्थ है, चाँद की बारहवी तिथि अर्थात शुक्लपक्ष द्वादशी।

१४. शरीर से सुगन्ध का निकलना - श्री मद्भागवत पुराण के अनुसार कल्कि की शरीर से निकली हुई सुगन्ध से लोगों के मन निर्मल हो जाएँगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेंगे।

मोहम्मद साहब के शरीर की खुशबु तो प्रसिद्ध ही है। मोहम्मद साहब जिससे हाथ मिलाते थे, उसके हाथ से दिन भर सुगन्ध आती सहती थी। मोहम्मद साहब के नौकर ने कहा था कि मोहम्मद साहब के शरीर की सुगन्ध वायु को सुगन्धित कर देती थी, जब घर वह घर से बाहर निकलते थे।

एक बार उस्मेसुलैन ने मोहम्मद साहब के शरीर का परीना इकट्ठा किया। मुहम्मद साहब के पुछने पर उसने बताया कि इसे हम खुशबुओं में मिलाते हैं, क्योंकि यह सभी सुगन्धों से बढ़ कर है।

१. असह उस्सियर,,पेज ४३

२. अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वैवासुदेवाङ्गरागतिपुण्यगन्धनिलस्पृशाम।

-भागवतपुराण, द्वादश स्कन्ध. द्वितीय अध्याय, २१ वाम श्लोक

३. शिमाएल तिरमिजी-अनुदित--मौलाना मोहम्मद जकरिया पेज २०

4. 'Anas, his servant, says, 'we always used to know wen Mohamet had issued forth from his chamber by the odouriferous perfume thet filled the aie' 'Life of Mohamet' by Sir William Muin page. 342

१५. अष्टैश्वर्यगुणान्वित - भागवत पुराण १२ स्कन्ध द्वितीय अध्याय में कल्कि को - अष्टैश्वर्यगुणान्वित- (आठ ईश्वरीय गुणों से युक्त) कहा गया है। वे आठ ईश्वरीय गुण हैं- प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रिय-दमन, श्रुतिज्ञान, पराक्रम थोडा बोलना, दान औकृतज्ञता१।

(क) प्रज्ञा - ऊँचा ज्ञान विषयक साम्य भी मोहम्मद साहब से है। भुत, भविष्य और वर्तमान की सभी बातें बताने में मोहम्मद साहब पूर्ण समर्थ थे, इस बात के समर्थन में अनेकों उदाहरण मोहम्मद इनायत अहमद की -अलकलाबुल्बीन- पुस्तक में मिल जाएँगे। प्रमाण रूप में उस पुस्तक में एक इतिहास संक्षेप में है-रोमियों और ईरानियों की लड़ाई में रोमी जब परास्त हुये, तो मोहम्मद साहब ने अपनी परोक्षदर्शिता से इस घटना को अपने मित्रों से बताया। उनके मित्रों से इस घटना को जानकर कुरैशी (विरोधी) बहुत प्रसन्न हुआ, परन्तु एक फरिश्ते से ६ वर्ष के अन्दर रुमियों की होने वाली विजय कठी भविष्य वाणी को सुनकर मोहम्मद साहब के मित्र अबूबक्र से एक २ हजार ऊँटों के हार जाने की शर्त रखी, अन्त में ६ वर्षों के अन्दर नैनवा (Ninevah) के युद्ध में रुमियों की विजय ६२७ ई. में हुई इसी विषय से सम्बन्तिसुरे रुम - नामक कुरान की ३० वीं सुरत उतरी हैइसी प्रकार के अने के उदाहरण जो उनकी दुरदर्शिता से सम्बन्धित है, इतिहास से ज्ञात हैं।

१. अष्टौगुणाः पुरुषं दीपयन्ति

यज्ञा त कौल्यं च दमः श्रुतंच

पराक्रमश्चबहुभाषिता च

दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च

महाभारत

(ख)कुलीनता-कल्कि मुख्य ब्राह्मण के परिवार से सम्बन्ध होंगे इसकी पुष्टि ऊपर हम कर चुके हैं। मोहम्मद साहब भी उँचे पुरोहित परिवार मे पैदा हुये थे। उनका परिवार पवित्र काबा का संक्षक या२। मोहम्मद साहब का जन्म ५७१ ई. में कुरैश की पंक्ति में हाशिम के परिवार में हुआ था, जो अरब के निवासियों द्वारा माननीय तथा काबा का परम्परागत संरक्षक या२।

(ग) इन्द्रिसदमन-आठ ईश्वरीय गुणों मे तीसरा गुण है-इन्द्रियों को वश में करना भारतीय धर्म ग्रन्थों में कल्कि के विषय में कहा गया है, कि कल्कि इन्द्रिय दमन करने वाले होंगे। मोहम्मद साहब के विषय में कहा गया हैकि वह आत्मप्रशंसा से हीन, दयालु शान्त, इन्ति, इन्द्रियजीत और उदार होंगे। ३- इन्द्रिसदमन का अर्थ है, कि इन्द्रियों को वश में करना।

1. He was born in A.D. 571, and came of the noble tribe of the Koreysh, who had long been gurandians of the sacred Kaaba.

Page - XXVI of Introduction, the speeches of Mohemmad, by Lane - Poole, Published by macmillan and C. (London)

2. He sprung from toe tribe of Kortsh and the family of Hashem, the most illustrious of the Arabs, the princes of Macca, and the here ditary guardians of the Caaba.
3. Modesty and kindliness, patience, self denial, and riveted the affections off all around him
Page 525, Life of Mohamet by - Sir Willuams Muir
Published by amith, elder and Co. (London) 1877 A.D.

इन्द्रियाँ मन के अधीन होकर काम करती हैं अतएव मन को वश में करना ही इन्द्रियों को वश में करना है। यदि कोई यह अपति करे, कि जो पुरुष ६ विवाह करे, उसको घोर कामी या भोग विलास छोड़कर इन्द्रियों को वश में करना वाला कैसे कहा जा सकता है? तो उन्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि योगिराजश्री कृष्ण की पटरानियां क्या संख्य में छः से अधिक नहीं थी? योगी तो संसारिक भोग विलासों के अन्तर्गत रहकर भी निष्काम भावना के कारण मुक्त हो जाता है। जैसे कमल का पत्ता जल में रहते हुये भी जल से परे रहता है। जैसे कमल का पत्ता जल में रहते हुये भी जल से परे रहता है वैसे योगी पुरुष (ईश्वर के प्राप्त करने वाला) भी संसार के भोगों एवं विलासों में रहते हुये भी उससे परे रहता है। अतएव मोहम्मद साहब द्वारा ६ पत्तियों का रखा जाना लोकोत्तर पुरुषत्व का ही द्योतक है, न कि इससे उनके इन्द्रियदमनकारी होने में कोई कमी आती है।

(घ) श्रुत-श्रुत आठ ईश्वरीय गुणों में चौथा गुण है। श्रुत का अर्थ है, जो ईश्वर के द्वारा सुनाया गया और ऋषियों या पैगम्बरों द्वारा सुना गया हो -श्रुत शब्द श्र (सुनना) धातु से बना है। ईश्वरीय ज्ञान जिस ग्रंथ में हो, उसे श्रुत कहा जाता है। मोहम्मद साहब पर फरिश्ते द्वारा ईश्वरीय ज्ञान उतारा जाता था, जिसे वह्य भी कहा जाता है। लेनपुल इस बात का समर्थन करते हैं, कि मोहम्मद साहब पर देवदुत की सहायता से ईश्वरीय वाणी का भेजा जाना निःसन्देह सत्य है १ : आर.वी. स्मिथ भी

1. These are the first revelations, that came to Mohemmad that he elived, he heard them, spoken by an angle from heven is beyond doubt,
Page XXXI, Introduction; speeches of Mohemmad, by Lane-pool.

इस बात से सहमत है, कि एक वह्य में मोहम्मद साहब सन्देश का पद पाने वाले घोषित किये गये हैं २।

सर विलियम म्योर ने भी मोहम्मद साहब के विषय में लिखा है कि शारीरिक शक्ति में मोहम्मद साहब काफी बड़े हुये थे। इसके उदाहरण के रूप में एक पहलवाम जिसका नाम रुकना था, का वृत्तान्त उपस्थित किया जा रहा है। किसी गुफा में अकेले

उपस्थित रुकना पहलवान जो कुरैश से सम्बन्धित था, से मोहम्मद साहब ने ईश्वर से न डरने और ईश्वर पर विश्वास न करने का कारण पुछा जिस पर पहलवान ने सत्य की स्पष्टता का लिये कहा। तब मोहम्मद साहब ने कहा. कि तू तो बड़ा वीर है, यदि कुश्ती में मै, तुझे नीचा दिखाऊँ तो क्या विस्वास करेगा? उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया, तब मोहम्मद साहब

1. Upon this Mohammed felt the heavenly inspiration and read, as he believed, the decrees of God, which he after words, promulgated in Kordn. Then came the announcement, O, Mohammed of a truth art the prophet of God and I am his angel Gabriel This was the crisis of Mohammed's life was his call to renounce and to take the office of prophet,
Page 98, Mohammed And Mohamednisu, By Rev. Bosworth smith-
2. He was now the servant, the prophet, the vice gerent of God.
Page 48, Life of Mohamet by Sir William Muir.

तब मोहम्मद साहब ने उसे दो बार परास्त किया, फिर भी उस पहलवान ने मोहम्मद साहब को पैगम्बर को न माना, तथा ईश्वर की सत्यता पर विश्वास न किया।

(च) अबहुभाषिता-अबहुभाषिता का अर्थ है-थोड़ा बोलना। थोड़ा बोलना महान पुरुष का बहुत बड़ा गुण माना जाता है। मोहम्मद साहब भी अधिकतर मौन रहा करते थे, परन्तु जो कुछ बोलते थे, वह तिना प्रभावोत्पादक होता था, कि लोग उनकी बातें नहीं भूलते थे। पारस्परिक वार्तालाप में मोहम्मद शान्त ही रहते थे, परन्तु अरब के लोग उनकी बातें सुनना बहुत सपन्द करते थे।

(छ) दान-ज्ञान धर्म का आवश्यक अंग है। दीनों को दान देना आठ गुणों में सातवां न इसे स्वीकृत किया है। कल्कि कोतो अष्टैश्वर्यगुणन्वित

१. देखिये असह उस - सियर, पेज ६७ तथा क्लडुजहण्टद का पेज. ५२३

-By Sir W. Muir

2. He was of great taciturnity, but when he spoke, it was with emphasis and deliberation, and no one could forget what he said.
Page - XXIX, Introduction, The speeches of Mohammad by Lane-qool
3. In his intercourse with others, he would sit sile, but among his companions for a long tie together, but truly was more eloquent than other men's speech for the moment, speech was called for, it was forth coming in the shape of some weighty apothegm or proverb such as Arabs love to hear.
Page - 10 'Mohammed and Mohammedanism'

-By R. Bos Worth smith. फा.-४

कह कर पुराणों द्वारा उनमें आठों गुणों का सन्निवेश कर दिया जाता है। मोहम्मद दान देने में सतत लगे रहते थे। इनके घर में गरीबों की जमघट लगी रहती थी। वे किसी को

निराश नहीं करते थे।

सरनिलियम म्योर ने भी मोहम्मद साहब को बहुत सुन्दर स्वरूप वाला, पराक्रमी तथा दानी बताया है२।

(ज) कृतज्ञता -आठ दैवी गुणों में कृतज्ञता (किये गये उपकार को समझना) अन्तिम गुण है। इस गुण के अभाव में कोई भी महापुरुषत्व को नहीं प्राप्त करता है। कल्कि में कृतज्ञता को लेकर आठों गुणों की स्थिति की भविष्यवाणी पुराणों में है, जैसे कि पहले हम स्पष्ट हो चुकी, और कृतज्ञता की उनमें स्थिति को कोई भी ऐतिहासिक अस्वीकार नहीं कर सकता। संसार के प्रति कहे गये वाक्य मोहम्मद साहब की कृतज्ञताका स्पष्टीकरण करते हैं३।

१३. ईश्वरीय वाणी का उपदेष्टा - कल्कि के विषय में यह बात

1. 'Indeed, outside the prophet's house was a bench or gallery, on which were always to be found a number of poor, who lived entirely upon his generosity and were called, the people of the bench'
Page - XXX, Introduction, the speeches of Mohammed by - Lang - poole
2. He was says an admiring followen; the handsomest and bravest, the bright faced and most generous of men. -Page 523, The life of Mohet' by Sir William Muir
3. Asah us siyar, Page 343.

भारत में प्रसिद्ध ही है कि वह जो धर्म स्थापित करेंगे वह धर्म होगा और उनके द्वारा उपदिष्ट शिक्षाएँ होगी। मोहम्मद साहब के द्वारा अभिव्यक्त कुरआन ईश्वरीय वाणी है, यह तो स्पष्ट ही है, भले ही उठी लोग इस बात को न मानें, क्योंकि कुरआन में जो नीति, सदाचार प्रेम उपकार आदि करने के लिए प्रेरणा के स्रोत विद्यालय हैं। वही वेद में भी है। कुरआन में मूर्ति पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश हैं, वेद में भी है। कुरआन में मूर्ति पूजा का खण्डन, एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा परस्पर प्रेम के व्यवहार का उपदेश हैं, वेद में एक सत तथा विश्वबन्धुत्व की उत्कृष्ट घोषणा है। वेदों में ईश्वर की भक्ति का आदेश है और कुरआन की शिक्षा के द्वारा मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज अवश्य पढ़ते हैं, जब कि ब्राह्मण वर्ग में विरले लोग ही त्रिकाल सन्ध्या करने वाले मिलेंगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्कि और मोहम्मद साहब के विषय में एक सी बातें हैं। अब उपसंहार के रूप में हम वेदों और कुरआन की मूल शिक्षाओं की समानता पर विचार प्रस्तुत करेंगे।

वेदों और कुरान की शिक्षायें

१. ईश्वर वह है, जिसके अतिरिक्त कोई दूसरा पूज्य नहीं वह सदा रहने वाला और स्वयं अपने में स्थित है और जितनी वस्तुएँ हैं, उसी पर आधारित है। जब तक उसकी आज्ञा न हो, कोई उसके प्रबन्ध में व्याघात नहीं डाल सकता, वह हमारे आगे और पीछे की सब बात जानता है और हम उसके ज्ञान के भंडार से केवल उतना ही जान सकते हैं जितना वह चाहे, आकाश और पृथ्वी सब उसके ज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित है, वह इन सबको संभाले है, वह सभी थकता नहीं, यह सबके ऊपर और सबमे बड़ा है।

उपनिषदों के एक ब्रह्मा द्वितीय नास्ति, नेहनानास्ति - चन का अर्थ यह है कि वह ईश्वर एक है, उसके अतिरिक्त दूसरा वहाँ है, यहाँ से उसके

१. कुरआन २-२५५

बिना कुछ है ही नहीं, अथवा जगत की सत्ता तभी है, जब तक ईश्वर की सत्ता जगत को संभाले है। यदि ईश्वर की सत्ता को अस्वीकृत किया जाय, तो जगत का अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

२. जिसको कोई भी चक्षु के द्वारा नहीं देख सकता अपितु जिससे नेत्र अपने विषयों को देखता है, उसे ही तू ब्रह्मा जान।

कुरआन में कहा गया है कि आँख उसे नहीं देख सकती पर वह सह आँखों को देखता है।

३. कह दो कि ईश्वर एक है, बाकी सब उसी के आश्रय है। न वह कभी जन्म लेता है और न किसी को जानता है। उसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है। परमेश्वर एक है, सभी प्राणियों में व्याप्त

१. यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षुषि पश्यति।

तदेव ब्रह्मा त्वं विध्व नेद यदिदमुपासते॥

-केनोपनिषद् (सामवेद तलवकार ब्रह्मण) सं. १. मन्त्र ६

२. कुरआन, ६-१०२ से १०४।

३. कुरआन सूर १ आयत ५

४. अग्ने नय सुपथा राये . ऋग्वेद १.१९६.१, वा. य. ३.३६.

७. ४३:४०, १६:तै. सं. १.१.१४.३:४:४६:९,

तै. ब्रा.२.८,२.६, तैआ.१.९., शतब्र १४.०.३.१।

५. कुरआन (११२-१ से ४) है, सभी कर्मों का अध्यक्ष है, सभी के ऊपर है, सबका साक्षी (गवाह) है, सब कूछ जानता है, और निर्गुण है१।

४. ईश्वर सत्य (अल्लाह हक है)२। वेदान्त में कहा गया है कि सत्यं ब्रह्मा सत्य है.।

५. जिधर भी तुम मुह करो, उधर ही परमेश्वर का मुख है३। गीता में कहा गया है कि विश्वतोमुखम अर्थात् उसके सब तरफ मुख है१।

६. वेदों में और गीता तथा स्मृतियों में एक ईश्वर की भक्ति करने का आदेश है तथा अपनी की हुई बुराईयों की क्षमा माँगने के लिए भी उसी ईश्वर से प्रार्थना करने का आदेश हैं। कुरआन में भी कहा गया है, कि ऐ नबी। मैं तो केवल तुम्हें जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी और ब्रह्मा की जाती है कि तुम्हारा इलाह (पुज्य) अकेला पूज्य हूँ। तो तुम सीधे उसी की ओर मुख करो ओर क्षमा भी उसी से मांगे५।

१. एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वभूतान्तरात्मा। कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी जेता केवलो निर्गुणश्च॥ -श्वेताश्वतर उपनिषद् अध्याय ६, मन्त्र ११

२. कुरआन २१.६२१ ३. कुरआन २.११५

४. सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपातः स भूमि विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दसांगुलम॥

ऋग्वेद १.३.३ सामवेद ६१७, अकां. १६.६.१ वा.य.३१.१, तैआ. ३.१२.१

कुरआन अस-सजदः अध्याय ४१. आयात नं. ६.

वेदों (ईश्वरीय वाणी या ईश्वराज्ञा)पर श्रद्धा न करता एवं उसके उपदेशों को न मानना नास्तिकता है। नास्तिकता का अर्थ है कि अस्वीकार करना। कुरान में कफिर शब्द इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। कुफ्र का अर्थ है, अस्वीकार करना या भुला देना ईश्वर तथा पैगम्बरों को न मानने वालों के मुख से कहलाया गया है कि जो कुछ तुम कहते उसकी तरफ से हम काफिर हैं (अर्थात् उसका हम अस्वीकार करते हैं)।

७. **मुसलमान** का अर्थ है कि ईश्वर की आज्ञा को मानने वाला। तात्पर्य यह कि ईश्वरीय वाणियों पर तथा आप्त पुरुषों पर जिसने ईमान लाया, वही है मुसलमान। ठीक इसी शब्द अनुरूप संस्कृत साहित्य में आस्तिक शब्द आया है आस्तिक का अर्थ है, ईश्वर, ईश्वरी वाणी आप्त पुरुषों पर श्रद्धा रखने वाला। जिस प्रकार आप्त पुरुषों की वाणी को संस्कृत साहित्य

सैं आगम प्रमाण माना गया है, उसी प्रकार आप्त (पैगम्बरों) की वाणी को भी आगम प्रमाण माना गया है। काफिर का ठीक विलोम मुसलमान तर्क करना नहीं चाहेगा और न तो नास्तिक से कोई आस्तिक भी बात करना स्वीकार करेगा। भारत में पचहत्तर प्रतिशत आस्तिक तथा २५ प्रतिशत नास्तिक और काफिर एक दूसरे के भाषान्तर है और मुसलमान और आस्तिक भाषान्तर है।

१०. रही बात हिन्दू शब्द की, सो यह शब्द विलकुल ही नवीन शब्द है। प्राचीन भारतीय धर्म को आर्य धर्म कहा जाता था या सनातन धर्म१।

१. कुरआन ३४३४

आर्य धर्म का अर्थ है श्रेष्ठ धर्म१, और सनातन धर्म का अर्थ है, सब दिन से चला आने वाला धर्म। सना-सब दिन। तन-चला आने वाला। वेद की संस्कृत के सकार को फारसी तथा ईरानी (ग्रीक) में हकार हो जाता है। ग्रीक के लोग सिन्धु तट तक आते थे और सिन्धु के सकार को हराक में बदल कर हिन्द शब्द बना दिये, स्थान को स्तान उच्चारण करके हिन्दुस्तान और वहाँ रहने वाले लोगों को हिन्दू कहने और हिन्दुस्तान और भारतीयों को हिन्दु कहा जाने लगा तथा अंग्रेजों ने हिन्द शब्द में अपनी भाषागत विशेषतों के कारण (हिन्द) Hindi के ऊ का लोप करके इन्दु इण्ड और indo तथा देश सूचक इथ जोड़ कर इन्दुइथ (इण्डिया) शब्द बना लिये। इण्डिया में रहने वाले इण्डियन शब्दों का एक ही अर्थ हुआ - भारत हिन्दुस्तान, इण्डिया में रहने वाला। यदि कोई भारत हिन्दुस्तान तथा इण्डिया को एकार्थक न माने तो उसकी अल्पज्ञता है। भारत में रहने वाला ईसाई, मुसलमान, द्रविड, कोल, किरात, भिल्ल, पारसी, संथाल आदि सभी हिन्दू (हिन्दी) हैं, सभी इण्डिया हैं, सभी भारतीय है। यह भाषा विज्ञान से सिद्ध है। हिन्दु धर्म, इण्डियन धर्म, सनातन या आर्य धर्म में भेद नहीं है। वेद है केवल भाषा का।

१. आर्यधर्मो हि ते राजन सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः।

ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारुणम्॥

- भाविष्यपुराण प्रतिसर्गपर्व, तृतीय खण्ड, अध्याय ३, २४वां श्लोक।

उपसंहार

केवल मैं ही नहीं, सभी शिक्षित वर्ग पक्षपात रहित होकर सम्पूर्ण राष्ट्रों के भावी जीवन को शान्तिप्रिय बनायेगा। भारतीय जिन कल्कि को भगवान मानते हैं, मुसलमान उन्हीं कल्कि के चेले हैं। कल्कि के विषय में कहा गया है, कि यह भारतीयों का बहुत ही बड़ा कल्याण करेंगे, इस भावना को लेकर प्रत्येक भारतीय स्वयं को हिन्दू कहे या इण्डियन, कल्कि पर विश्वास करें, क्योंकि वही अन्तिम अवतार है, जो घोड़े पर चढ़ना तथा तलवार धारण करना स्वीकार करेंगे, अब जो भावी युग आ रहा है, वह घोड़ों और तलवारों के युग से काफी दूर होता जा रहा है। भारतीयों के सबसे बड़े हितैषी सिद्ध होंगे। इस्लाम मुसलमान अरबी भाषा के शब्द है, जिनका अर्थ ईश्वराज्ञ पालन धर्म या सनातन धर्म तथा आस्तिक होता है।

जो धर्म के अन्धे अनुयायी होकर अपने सनातन धर्म को सीमित बना देता हैं, और दूसरे धर्मों को न समझते हुये परस्पर करते हैं, वे ईश्वर के राज्य में अग्नि द्वारा तपाय जाते हैं। मैंने अपने इस शोधपत्र को किसी पक्षपात की भावना से नहीं लिखा है। अन्तर्यामी का मुझे आदेश मिलता है, कि हिन्दु मुस्लिम एकता का बाधक जो विद्रोह कभी-कभी खड़ा हो जाता है, और ईश्वर की दुहाई देकर दोनों पक्ष एक दूसरे का संहार करते हैं, यह ईश्वर को बुरा लगता है। शिक्षा देना उपदेशक का काम हैपालन कराना उपदेशक के जिम्मे नहीं हैवह तो ईश्वर के जिम्मे है। एक मनुष्य क्या किसी से कुछ करायेगा। ईसा ने जिन अहमद (ईश्वर ते प्रशंसक) के विषय में भविष्यवाणी की, वेदव्यास जी ने भावी वृत्तान्त के रूप में जिन कल्कि का व्याख्यान किया, उन्हीं की गवाही देना मेरा कर्म है। ईसाई कल्कि को माने या न माने, परन्तु भारतीय तो अवश्य उसे मानेंगे।

कल्कि और मोहम्मद साहब के विषय में जो अभूतपूर्व साम्य मुझे मिलास उसे देखकर यह आश्चर्य होता हैकि जिन कल्कि की प्रतीक्षा में भारतीय बैठे हैं, वे हो गये और वही मोहम्मद साहब हैं। दोनों के साम्य में यदि कहीं कोई बाधक प्रमाण मिले, तो या तो उन्हें क्षेपक समझ लेना चाहिये ता हरि अनन्त हरि कथा अनन्त से युगानुसार चरित वैभिन्य। मौलिक धर्म-सिध्दान्त प्रायः एक ही हैं, परन्तु आल्पबुद्धि के लोगों को वह बोध-गम्य नहीं।

कुछ समय पहले वैदिक धर्म में मिश्रित बुराइयों का निराकरण करने वाले बुद्ध जी द्वारा उपदिष्ट धर्म एवं तद्धर्मानुयायियों को घृणा की दृष्टी से देखा जाता था और लोग यह समझते थे कि वैदिक धर्म से अतिरिक्त यह नया धर्म है, परन्तु पुराणों के चौबीस अवतारों के

प्रकरण में जब यह पढ़ा गया कि बुद्ध जी तेईसवां अवतार है, तब लोगों की समझ में आया, कि यह धर्म ही है और बुद्ध जो तो अवतार ही है, तब वैदिक एवं वौद्धों का भेद दूर हो गया और आजवौद्ध भी धर्मानुगत ही आते हैं। उसी प्रकार मोहम्मद साहब जी द्वारा प्रदर्शित सनातन धर्म तथा उनके अनुयायियों को देखकर यह तो वैदिक धर्म का उलटा ही धर्म का उलटा ही धर्म है, परन्तु चौबीस अवतारों के प्रकरण में भागवत पुराण में जब मैंने कल्कि को देखा तथा द्वादश स्कन्ध में उनके होने वाले वृत्तान्त को पढ़ा तब मोहम्मद साहब से पूर्ण समानता मिली और मुझे विश्वास हो गया कि यहीं हैं कल्कि और उनके धर्म की बाड तथा अनुयायियों की सबको ज्ञान हो जायेगा, तब मुसलमानों का इस्लाम धर्म या अस्तिकों का ईश्वराज्ञा पालन धर्म, भारत में प्रचलित वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन, तथा बौद्ध धर्म की भाँति सभी लोगों द्वारा स्वीकृत होगा, तथा भारतीयों का और मुसलमानों का वर्ग मिलकर एक बहुत बड़ा समाज बनेगा। लाठी डंडो की चोटी से धर्म नहीं फैलता, अपितु लोगों को जब ईश्वर की कृपा से धर्म के सत्य स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। तो वे स्वयं श्रेष्ठ धर्म का आचरण करने लगते हैं। धर्म के जानकार का कर्तव्य है कि वह धर्म के सिद्धान्तों से लोगों को अवगत कराये, वे श्रद्धा उत्पन्न होने पर उसे स्वयं मानेंगे, दंगा करने पर थोड़े कोई मानता है। ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों को तो शान्ति पूर्वक धर्म का प्रचार करना है। धर्म का सम्बन्ध वेशभूषा से नहीं, न तो दाढ़ी या चोटी रखने से, यह तो शरीर का बनावटी दिखाया है। धर्म का सम्बन्ध हृदय में सन्निहित उन विचारों से है, जिनसे जीवन की यात्रा सुचारु रूप से सम्पन्न हो।

प्रत्येक हिन्दू, भारतीय या इण्डियन को यह ज्ञात होना चाहिये कि केवल वे ही हिन्दू नहीं हैं, बल्कि यहाँ रहने वाले मुसलमान तथा ईसाई भी हिन्दू हैं, क्योंकि हिन्दू शब्द का अर्थ होता है कि जो हिन्दुस्तान में रहे।

मेरा मुसलमानों से भी अनुरोध है कि हिन्दू तथा हिन्दुस्तान शब्द उन्हीं की देन है, जिनका (हिन्दी) अर्थ उपर स्पष्ट किया जा चुका है, अतः वे भी अपने को हिन्दू कहने में संकोच न करें। भारत में जो वर्ण व्यवस्था थी, वह कर्म से थी न कि जाति से, क्योंकि वर्णांतर वर्णः जात्या जातिः। वर्ण शब्द किसी भी पेश को अनाने से है। ईश्वराराधन करने वाले तथा नित्य संयम से रहने वाले मुसलमान भी ब्राह्मण हैं, तथा ईश्वर पर विश्वास करने वाले भी मुसलमान अर्थात् आस्तिक हैं। मुसलमान का यह अर्थ नहीं कि खतरा करावा से मुसलमान और आस्तिक का यह अर्थ नहीं कि चोटी रखाई सौब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र। दाढ़ी आदि तो प्राचीनकाल में मुनि लोग भी रखते थे। भारत में ऊँच-नीच का भेद भाव जब तक सुख एवं शान्ति सम्भव नहीं। इस विषय पर बाद में कोई दूसरी पुस्तक लिखूँगा, क्योंकि इस शोधपत्र में इतना स्थान नहीं, कि हर एक बात आ सके।

ISLAM

THE ONLY AUTHENTIC RELIGION FOR MANKIND

PROOF OF SUCCESS IN THE WORLD AND FORGIVENESS IN THE AQIRAH

DESCENDED IN INDIA

HAZRATH ADAM (AS) was scended from JANNATH directly on the Mountains of Sarandeeep (Srilanka) on 10th of Muharram Night of Ashura. Hence the mountain is also called as ADAM PEAK. It is also said that the footprints of ADAM (AS) is found on it. HAVVA (AS) was descended in JEDDAH (Saudi Arabia).

ADAM PEAK: In the south of Srilanka 20kms. South-West of Colombo a mountain named ADAM PEAK is situated.

ADAM'S FOOTPRINT: The Footprint of ADAM (AS) admeasuring 5'.4" long and 2'.6" wide is found in the mountain.!

ADAM BRIDGE: From Srilanka to India a series of sand ladslides are present from onto which Hazrath Adam (AS) used to pass through. Hence it is called as Adam Bridge.

ISLAM: Every Nabi (Messenger of Allah) brought message of Islam on earth. Similarly Hazrath Adam (AS) also brought the message of Islam on earth. The knowledge of everything present on this earth was taught to him (eg: It's names and It's advantages and disadvantages). Hence the language we speak , the things we eat , the knowledge of each and every creative of this world is brought to us from Adam (AS).

PROOF:

Atlas-ul-Quran. Pg.27, Tibrani (Pub. Darussalam, Riyaz, Jeddah), Quran Shareef Surah Baqarah-36 Tafseer Qazin- Nama-Pg.330 Al-Imran-19, Maida-13 Islami Encyclopedia-Pg.20,22,822,832

COMPLETED IN ARAB

On 27th of Ramazan Monday Night about 610 A.D. in the cave of Hira, Quran started descending and this continued for the period of 23 years and completed on the 10th of Zilhajja 632 A.D. In Islam Rules and Regulations from birth to death are given

Islam on the basis of it's authenticity has been challenging the world for past 1400 years. Islam is the religion descended from the sky, and if anyone has any doubts on it, make and bring atleast a single Verse of Quran. Alhamdullillah no one had the capacity to stand against the declaration. Islam is an everlasting religion till the dooms day. Islam has doors of success in life and means of forgiveness for fruitful Aqirah.

PROOF:

Surah Al-Alaq 1-5 Ayath, Al-Maidah-3, Al-Imran-19, Al-Baqarah-12-25 Ayath.

EXTENDED IN THE WORLD

Allah Tala has descended Islam for the whole mankind.

Islam is a congregation of Peace, brotherhood, truthfulness and happiness. Due to it's truthfulness, authenticity and greatness Islam extended through out the world. Today also it is extending in the world and will extend till the dooms day.

No one can destroy Islam because Allah Tala himself has taken the responsibility of protecting Islam.

PROOF:

Al-Hajar-9, Al-Baqarah.



ADAM's FOOT PRINT



FIRST MAN LANDED ON THE WORLD (ADAM)



ADAM's BRIDGE



VIEW OF ADAM PEAK



WAY TO ADAM PEAK



ADAM's BRIDGE
SETELITE VIEW



ADAM's BRIDGE
GEOGROPHICAL MAP